

राजस्थानी वीर-गीत

भाग १ - मूलपाठ



अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर

सं० २००२

PRINTED AND PUBLISHED BY CHANDIT SRI RAM
SUPERINTENDENT,
AT THE GOVERNMENT PRESS, BIKANER

- •

आसिका

०

मुरधर मं नव जीवण उमगे,
रस उगळे सादळ-धरा ।
गार्दीजे अंगळ में मगळ,
धण परताप गगावत रा ॥

जुग-जुग जीवौ जै जगळधर,
कोइ दिवाळ्या राज करौ ।
करणी अमर करौ मा करणी,
भगवंत सुख भडार भरौ ॥

संपादकीय निवेदन

वीकानेर का राज-परिवार आरंभ से ही सरस्वती का समा-
राधक और साहित्य का संरक्षक रहा है। वीकानेर के नरेशों ने अनेकों
सु-कवियों और सुलेखकों को आश्रय देकर सरस्वती के भंडार की
श्री वृद्धि की। वीकानेर का राजकीय हस्तलिखित पुस्तकालय भारत-
वर्ष के प्रमुख पुस्तकालयों में से है। उस में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश,
राजस्थानी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली, फारसी आदि अनेक भाषाओं के
अमूल्य ग्रंथों का संग्रह है जिन में से कां-अेक अन्यत्र अलभ्य हैं।

वीकानेर-नरेशों में अनेक स्वयं भी अच्छे लेखक हुए। उन की
कृतियां आज भी वीकानेर के राजकीय पुस्तकालय की शोभा बढ़ा
रही हैं।

इस पुस्तकालय के अधिकांश ग्रंथ महाराजा अनूपसिंहजी के
समय में संगृहीत हुए। 'यह समय हिन्दुओं के लिये बड़े संकट का
था। बादायद और जेब की कट्टरता यहां तक बढ़ गयी थी कि उस
की दक्षिण की चढ़ाईयों के समय वहां के ब्राह्मणों को अपनी पुस्तकें
भ्रष्ट किये जाने का भय रहता था। मुसलमानों के हाथ से अपनी
पुस्तकें भ्रष्ट किये जाने की अपेक्षा वे कभी-कभी उन्हें नदियों में बहा
देना श्रेयस्कर समझते थे। संस्कृत-ग्रंथों के इस प्रकार नष्ट किये
जाने से हिन्दू संस्कृति के नारा हो जाने की पूरी आशंका थी। तैसी
दशा में धीरे धीरे विद्यानुरागी महाराजा अनूपसिंह ने उन ब्राह्मणों
को प्रचुर धन दे-देकर उन से पुस्तकें खरीद कर वीकानेर के सु-
रक्षित दुर्ग-स्थित पुस्तक भंडार में भिजवानी प्रारंभ कर दीं। यह
कहने की आवश्यकता नहीं कि उक्त पुस्तकालय में जैसे-जैसे बहु-
मूल्य ग्रंथ अभी तक सुरक्षित हैं जिन का अन्यत्र मिलना कठिन है।'

इतना महत्त्वपूर्ण होते हुए भी यह पुस्तकालय बाहर के विद्व-
त्समाज के लिये यत्न-कुछ रहस्यमय ही रहा। भूतपूर्व वीकानेर-
नरेश परमप्रतापी महाराजा धीरंगसिंहजीने अपने स्वर्ण-महोत्सव के
अवसर पर पुस्तकालय की नवीन व्यवस्था का आदेश दिया। पुस्तका-
लय प्रधानतया अनूप महाराजा पसिंहजी की ही कृति था अतः पुस्तका-

लय का नामकरण अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय किया गया और वह सब विद्वानों के लिखे खुला घोषित कर दिया गया। साथ ही संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन के लिखे श्री गंगा प्राच्य ग्रंथमाला 'The Ganga Oriental Series' की स्थापना की गयी।

पुस्तकालय में संस्कृत के अतिरिक्त राजस्थानी और हिन्दी के ग्रंथों का भी विशाल संग्रह है जिन में अनेक अन्यत्र अलभ्य तथा अधिकांश अप्रकाशित हैं। इन के प्रकाशन की व्यवस्था भी नितान्त आवश्यक थी। सुयोग्य पिता के सुयोग्यतम पुत्र वर्तमान वीकानेर-नरेश महागजा श्री सादूळसिंहजी वहादुर ने अपने सिंहासनारोहण के साथ श्री सादूळ प्राच्य ग्रंथमाला की योजना करके इस आवश्यकता की भी पूर्ति कर दी।

श्रीमान् का मातृ भाषा-प्रेम सर्वथा अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। मातृभाषा की ओर प्रारंभ से ही आप का ध्यान रहा है। महाराजा अनूपसिंहजी की भांति युवराजत्व काल से ही मातृभाषा के लेखक और कवि आप से आश्रय प्राप्त करते रहे हैं। इस ग्रंथमाला की स्थापना आप के मातृभाषा प्रेम का नवीनतम प्रत्यक्ष प्रमाण है। पूर्ण आशा है कि आप की छत्रछाया में राजस्थानी अपने उस प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करने में समर्थ होगी।

मातृभाषा राजस्थानी के साथ-साथ आप राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी परम प्रेमी हैं। आप ने आज्ञा दी है कि हिन्दी के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन भी इस ग्रंथमाला में किया जाय।

ग्रंथमाला का समर्पण ग्रंथ गीतमंजरी गतवर्ष श्रीमान् की वर्षगांठ के शुभ अवसर के उपलक्ष्य में प्रकाशित हुआ था। अब उस का प्रथम ग्रंथ राजस्थानी वीरगीत, प्रथम भाग, पाठकों के करकमलों में उपस्थित किया जाना है। द्वितीय भाग, जिस में इन गीतों का भावानुवाद, प्रस्तावना, शब्दकोष आदि होंगे, तय्यार हो रहा है और शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

सूचनिका

		पृष्ठ-संख्या
१. प्राक्कथन (डाक्टर सी. कुञ्जन् राजा)	...	[थ]
२. भूमिका	[प]
३. राजस्थानी वीर-गीत	...	१

[१] सामान्य गीत

(१) गीत-प्रशंसा	...	३
(२) क्षत्रिय-प्रशंसा	...	४
(३) क्षत्रिय-संतान-प्रशंसा	...	५
(४) वीर-प्रशंसा	...	६
त्याग-प्रशंसा		७

[२] विशेष वीरा रा गीत

(५) यादव छाया फूलार्णवी राँ	...	६
(६) राठौड़ पायू धांधळीत राँ	...	१०
(७) " " "	...	११
(८) राठौड़ भरदा घूडावत राँ	...	१५
(९) महाराणा हमीर अदसियाँत राँ	.	१६
(१०) राठौड़ राव सखसा तीडावत राँ	..	१७
(११) " राव महीनाथ सखग्राधन राँ	.	१८
(१२) " जैतमाज सखघायत राँ	..	१९
(१३) " राव घूंडा घीमदेवीत राँ	..	२०
(१४) " राव रिद्धमल घूंडावत राँ	..	२१
(१५) " " "	...	२२
(१६) सीसोदिया घूंडा खारावत राँ	...	२३
(१७) महाराणा फूमा मोकळीत राँ	...	२४
(१८) " " "	...	२५
(१९) राठौड़ राव जोधा रिद्धमलीत राँ	...	२६
(२०) " कांधळ रिद्धमलीत राँ	...	२७
(२१) " सरबदिया भैसा कपाटीत राँ	...	२८

(२२)	राठौड़ राव धीका जोधावत रौ	...	२९
(२३)	" "		३०
(२४)	" धीदा जोधावत रौ	...	३१
(२५)	" दूदा जोधावत रौ	..	३२
(२६)	महाराणा रायमख कुंमकरखौत रौ	..	३३
(२७)	राठौड़ महाराज अरौराजौत रौ	...	३४
(२८)	महाराणा सांगा रायमलौत रौ		३५
(२९)	" "	...	३६
(३०)	" "	.	३७
(३१)	" "	...	३८
(३२)	" "		३९
(३३)	भाळा बजा राजधरौत रौ	...	४०
(३४)	यादत गहद हमीरौत रौ	...	४१
(३५)	राठौड़ सेखा सूजावत नै गांगा बाणावत रौ		४२
(३६)	" राव जैतसी लूणाकरखौत रौ	.	४३
(३७)	" भोजराज सादावत रूपावत रौ.		४४
(३८)	सांभला महेस कल्याणमलौत रौ	...	४५
(३९)	" "	...	४६
(४०)	" "		४७
(४१)	वाढेख सिबा रौ	..	४८
(४२)	सरगहिया बीजा दूदावत रौ	..	४९
(४३)	" "	...	५०
(४४)	" करण धीजावत रौ	...	५१
(४५)	जाम रावळ लाखावत रौ	...	५२
(४६)	" "	.	५४
(४७)	" "	..	५५
(४८)	× ×
(४९)	जाडेचा जसा हरधमळौत रौ	...	५८
(५०)	भाळा रायसिध मानसिधौत रौ	...	५९
(५१)	चांहाण जगमाल जैसिधदेवौत रौ	...	६०
(५२)	पमार पंचापण रौ	..	६१
(५३)	राठौड़ देवीदास जैतावत रौ	...	६२
(५४)	" प्रिधीराज जैतावत रौ	...	६३

(११७) महाराणा राजसिंघ जगतसिंघौत रौ ...	१२६
(११८) " " ...	१३१
(११९) " " ...	१३२
(१२०) चारण सौदा नरा अमरावत रौ ...	१३४
(१२१) भोंसळा राजा सिवाजी साहजीयौत रौ	१३५
(१२२) राठोड दुरगादास नै सोमंग चांपावत रौ	१३६
(१२३) " महाराजा अनूपसिंघ करण- सिंघौत रौ ...	१३७
(१२४) " पद्मसिंघ करणसिंघौत रौ ...	१३८
(१२५) " " ...	१३९
(१२६) चौधरी गोयंददास मूळाणी रौ ...	१४०
(१२७) राठीड उदैसिंघ हरनाथौत करमसिंघौत रौ	१४१
(१२८) चौहाण वीठलदास अचलावत रौ ...	१४२
(१२९) " " ...	१४३
(१३०) " नाहरखान किसनशासौत रौ...	१४४
(१३१) कळवाहा सुजाणसिंघ स्यामसिंघौत रौ	१४५
(१३२) मूंधडा जसरूप रौ ...	१४६
(१३३) राठीड लालसिंघ वडली - ठाकर रौ ...	१४७

[३] अज्ञात समेषाळा वीरौ रा गीत

(१३४) सोढा खंगार रौ ...	१४९
(१३५) सींधल खंगार रायपालौत रौ ...	१५०
(१३६) सोळंकी जैचन्द्र रौ ...	१५१
(१३७) दौलतखान नारायणदासौत रौ ...	१५२
(१३८) भाटी दौलतसिंघ सुरलाणौत रौ ...	१५३
(१३९) भाटी वदरीसिंघ नै अनोपसिंघ पिराग- दासौत रौ ...	१५४
(१४०) राठीड भानसिंघ नै वैणीदास रौ ...	१५५
(१४१) पडिहार राजसी रौ ...	१५६
(१४२) मैणा सांगा रौ ..	१५७
(१४३) निरवाण सीहा रौ ...	१५८
(१४४) राठीड हरपाल देवराजौत रौ ...	१५९
(१४५) " हरीराम ऊवड रौ ...	१६१

अनुपूर्ति-गीत

(१४६) महाराजा सावुळसिंघजी री	...	१६३
४. अनुक्रमणिका	..	१६५
(१) प्रतीफानुक्रमणिका	..	१६५
(२) धीर-नामानुक्रमणिका	...	१७१
(३) धीर-जाति-नामानुक्रमणिका	.	१७५
(४) कवि-नामानुक्रमणिका	...	१७७

FOREWORD

It is a matter of sincere gratification that within a few months after the publication of *Gīt Manjarī* as the Dedicatory Volume in the Series bearing the name of His Highness the Maharaja of Bikaner, it has been possible for the Anup Sanskrit Library to bring out this *Vir Gīt* as the first volume in the Series. The arrangements for printing the Dedicatory volume were made during my stay in Bikaner in the summer of 1944. Now when I visit Bikaner in the summer of 1945 the first volume is also ready and the second part of this work is getting ready as the next number in the Series.

This volume contains 145 songs in Rajasthan. As the name implies, these are songs of heroism. The songs are divided into three groups: 1 to 4, 5 to 133 and 134 to 145. In the first group the subject matter is of a general nature. In the second group there are songs about individual heroes, whose date could be ascertained. These 129 songs are arranged in chronological order. They start from the twelfth century and come up to recent times. In the third group are included songs whose dates could not be ascertained and they are arranged in the alphabetical order of the name of the heroes. Besides their artistic value as literature these songs, belonging to various periods, will be of great help in studying the development of Rajasthan language.

I have always held on to the view that the literatures of Modern Indian languages and Sanskrit literature form a harmonious unit representative of Indian

culture and that they are mutually complementary. Sanskrit was, for many centuries, the medium for the expression of India's intellect and imagination. During the last one thousand years Indian poetry found expression through the various languages that grew up in the different parts of India. But the Vedas and the Puranas still continue to inspire the nation and to mould the life of the nation. The thoughts found in the literatures of the different languages are continuations and natural developments of the thoughts found in Sanskrit and Sanskrit unified the various languages into a cultural whole resisting the possible tendency of disintegration.

It is unfortunate that in recent times there is a new tendency developing to regard the various literatures as having mutually conflicting interests. The studies of these literatures are neglected in the school and university education, and ignorance comes to the aid of prejudices. The only way in which this tendency towards disruption could be arrested is to develop a taste for Indian literatures and to enable the people of the country to understand the cultural values of their literatures. When understanding displaces ignorance, sympathy will take the place of prejudices and people will find that there can be no conflict of interest between different literatures. The poets looked upon man and the world from the same angle, the difference is only in the medium, namely, the language. Every one who understands the real beauties of literary art knows also that there cannot be any more conflict between two literatures than there can be between two forms.

of art, say, painting and sculpture. Literature, like any other art, ultimately deals with man and belongs to man, to whatever language it belongs primarily.

The subject matter dealt with in these songs is just the subject matter that has been dealt with in the various strata of Sanskrit Literature from its earliest times, namely, the Vedic period. The hymns of the Rigveda are songs of heroism. Ramayana and Mahabharata are songs of heroism. The poets like Kalidasa, Bharavi, Magha and Sri Hansha sing of heroism. Sanskrit dramas depict heroism. Man's physical might is in modern times condemned as a sin, while the religion of our forefathers exalted it as the defender of man's highest goal. There was according to them perfect harmony between the *Self* of man and the body of man, and they were mutually complementary in origination, in function and in goal. The songs presented in this volume truly reflect the religion of our forefathers, a religion which alone can restore to us the position which once was ours.

When I visited Bikaner just over five years ago to prepare a list of the Sanskrit manuscripts in the Library as a part of my work in the Madras University in editing the New Catalogus Catalogorum of Sanskrit Manuscripts, little did I dream that the very humble beginning which I started then would be the foundation on which would be erected such a mighty structure. Bikaner had been a centre of learning for a long time. I had to create nothing. I had only to use a piece of cloth and remove the dust on the surface, and the mirror starts reflecting all the glory of the place. To change the metaphor,

I may say that I had only to remove the curtain and the glorious characters of ancient days, the kings and the ministers and the scholars, are there on the stage I consider it my greatest privilege in life to be the stage-boy pulling the curtain strings in this great drama

The present volume contains only the text. The Translation in Hindi, Notes, Glossary, detailed Introduction and such other material that will help the reader to better understand and appreciate the work, will form the second part and will be published at an early date

The matter that appeared in the Dedicatory volume was quite appropriate in inaugurating a Series from Bikaner, and I am sure that the readers will readily agree that the material presented here is equally appropriate in the first volume of the Series that bears the name of His Highness the Maharaja of Bikaner

Pandit Sri Ram, the Superintendent of the Government Press, Bikaner deserves both thanks and congratulations for bringing out the volume so expeditiously and at the same time so neatly

BIKANER }
16th May, 1945 }

C KUNHAN RAJA

भूमिका

श्री सादृळ प्राच्य ग्रंथमाळा रो पैलो ग्रंथ 'राजस्थानी वीर-गीत' पाठकां रै हाथां में राखतां घणो हरख हुवै है. इण में राजस्थानी (डिंगल) भाषा रा १४५ वीर-गीत हैं. आरंभ में च्यार प्रस्ताविक गीत है जकां में अेक मे गीत रो प्रशंसा तथा बाकी तीन में वीर और वीरना रो सामान्य प्रशंसा है. आगै १०० विशेष वीरां रा १४१ गीत हैं. वीर वीरुं तरां रा है-युद्धवीर भी और दानवीर भी. घणा सा वीरां रो समै ज्ञात है पण कई इसा भी है जकां रो समै का तो सर्वथा अज्ञात है का निश्चित रूप सू ज्ञात कोनी. इसा वीरां रा गीत अंत में न्यारै विभाग में दिया है. उपसंहार में ग्रंथमाळा रा संस्थापक वर्तमान वीकानेर-नरेण रो भी अेक गीत दियो है.

घणाकरा वीर राजस्थान रा है पण कई-अेक काठियावाड़ और कच्छ रा भी है. इण देसां रो राजस्थान रै साथै सदा सूं घनिष्ठ संबंध रह्यो है. अेक गीत मराठा वीर शिवाजी रो है.

घणा गीतां रा कवियां रो पतो कोनी. जकां रो पतो लाग्यो उणां रा नाव गीतां रै साथै दे दिया है. कवियां में कई चारण है, कई चारणोतर. चारणोतरां में भाट, भोजक, राजपूत, ब्राह्मण और जैन साधु है. शिवाजी आळो गीत अेक जैन साधु री रचना है. चारण कवियां में घणो महत्त्वपूर्ण नांव वारठ ईसरदास रो और चारणोतरां में प्रिथीराज राठौड़ रो है.

घणा सा गीत समकालीन कवियां रा वणायोड़ा है पण कई अेक, विशेष कर प्राचीन वीरां रा गीत, पछै वणियोड़ा है पावूजी रा गीत उगणीसवें-१ सर्वे सईका री रचना है. लाखा फूलाणी रो गीत भी विशेष पुराणो कोनी दीसै कई गीतां री भाषा बदलीजगी है जिण सूं ये नवीन लागै, उदाहरणार्थ महाराणा हम्मीर रो गीत.

डिंगल वीर-गीत दो भांत रा है, अेक जकां रो महत्त्व ऐतिहासिक है और दूसरा जकां रो महत्त्व साहित्यिक है. इण ग्रंथ में पकळीतरां

रा गीत ही प्राय कर लिया है. घणा गीतां मे Conscious art री भांकी मिलसी.

इण गीतां रै संबंध मे दो वातां विशेष कर ध्यान मे राखण जिली हे, अेक तो आ के गीत नाम हुता थकां भी अे गावण री चीजां कोनो, इणां री रचना गावण वास्तै कोनो हुई ही और ना अे गायीजता हा. अे तो अेक विशेष लै सूं बोलीजता हा. गीत राजस्थानी छंद-शास्त्र में पद्य-रचना री अेक पारिभाषिक संज्ञा है.

ध्यान में राखण री दूजी बात आ है के अेक गीत में प्रायः कर (पण सदा नहीं) अेक ही भाव हुवं जको गीत रै पैलड़े दोहलै में कहीजै. आगै रा दोहलां में वो ही भाव प्रकारांतर सु ल्पायीज कवि साधारण हुयो तो पछला दोहलां में पैलड़े दोहलै रै भाव री शब्दांतर मान करनै राख देसी पण प्रतिभावाळी हुयो तो इंस अनोरै ढंग सूं, वक्रता रै साथै, कैसी के सहसा पुनरावृत्ति को प्रतीत हुवं नी.

गीतां री संकळन नीचे बताया आचारां सूं करीज्यो है—

(फ) अप्रकाशित—

(१) अनूप संस्कृत पुस्तकालय री नीचे लिपी हस्त लिखित पोथियां:—

१. गीत-संग्रह नं० ६
२. गीत-संग्रह नं० ८
३. गीत-संग्रह नं० २१
४. जसरत्ताफर
५. दयालदास री ख्यात

(२) धीयुत अगारचन्द नाहटा रै भंडार री अेक हस्त-लिखित पोथी.

(ग) प्रकाशित—

१. ठाकुर भूरसिंह — महाराणा-जस-प्रसंग
२. " — विविध संग्रह
३. बांकीदास घंघायळी, भाग ३
४. राजस्थान प्रमातिक, भाग १ तथा २.

गीतां रो पाठ निश्चित करण में घणी कठनाई हुई. हस्तलिखित पोथियां में पाठ री अशुद्धियां जागां-जागां दीखी. पाठान्तरां री भर-मार रो तो कैणो ही काई ? जिन्ती पोथियां बित्ताई पाठ. इण ग्रंथ में अर्थ देखतां जको पाठ ठीक मालम हुयो वो लियो है. जठे साफ लेखक री अशुद्धि मालम हुयो वठे संशोधन कर दियो है. छंद रै अनुसंधान सँ गुह नै लघु अथवा लघु नै गुह भी घणी जाग्यां करणो पड़गे है. राजस्थानी में व और व न्यारी-न्यारी ध्वनियां है पण प्रैस में व रो टाइप नहीं हुऐ सँ दोनों रो काम व सँ ही लियो है.

गीतां नै विना अर्थ रै व्यापणा व्यर्थ है ओ समझ नै, आपणी अयोग्यता नै जाणतां थकां भी, साथै अर्थ देवण रो प्रयास करचो है (अर्थ दूसरे भाग में है). राजस्थानी भाषा रै पुराणै साहित्य रो अर्थ बतावणवाला विद्वानां रो अत्यंतभाव तो कोनी पण वै दुरलभ जरूर है और आज इसा साधन भी कोनी जकां रो सायता सँ कोई राजस्थानी साहित्य रै दुर्गम बन में प्रवेश करण रो साहस करे सर्वांगपूर्ण तो आघो र्हा, कोई छोटी मोटी काम-चलाऊ कोष भी आज उपलब्ध कोनी. भाषाविज्ञान और पुराणी तथा पढ़ोसी भाषां रै तुलनात्मक ज्ञान रै सहारै ही थोड़ी-घणी गति हुवे तो हुवे. संकलनकर्त्ता भाड़-भंराड़ां नै बाढनै अेक काम-चलाऊ मारग मात्र तयार करचो है. हाल उण रा कांटा पूरी तरां सँ साफ नहीं हुया है, पण वो दिशा-सूचन रो काम कर सकसी. आषा है सुयोग्य विद्वानां नै राजमार्ग तयार करतां घणी धार फो लागै नी.

अज्ञान और विस्मृति रै अंधकार में पड़ी राजस्थानी री अण-मोल साहित्य-निधि नै प्रकार में लापण रो पथ प्रयस्त कर नै विद्या-प्रेमी और मद्गुणग्राही वोकानेर-नरेण महाराजा श्री सादूलसिंहजी पहाडुर मातृभूमि और मातृभाषा रो जको मोटो उपकार करचो है उण रै वास्तै विद्वत्समाज उणां रो चिर-कृतज्ञ रैसी. इण मौके रो लाभ लेनै संकलनकर्त्ता भी आप री हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करै है.

वोकानेर राज रा साहित्यानुगामी प्रधान-मंत्री श्रीयुत फ. मा. पण्डितकर री कृपा सँ इण ग्रंथ नै श्री सादूल प्राच्य ग्रंथमाला रो प्रथम ग्रंथ हुवण रो गौरव प्राप्त हुयो इण वास्तै, तथा उणां सँ जको

प्रोत्साहन निरंतर मिलतो रह्यो उणा घास्तै, संकळनकर्ता उणां रो ह्वय सूं आभारी है.

अनूप संस्कृत पुस्तकालय रा अवैतनिक सलाकार तथा मद्रास विश्वविद्यालय रै संस्कृत विभाग ग प्रधान डाक्टर सी. कुञ्जन् राजा अ्रेम अ्रे, डी. फिल्, सूं घणी दिशावांमें पथ-प्रदर्शण और प्रोत्साहन प्राप्त हुयो डाक्टर दशरथ शर्मा अ्रेम. अ्रे., डी लिट्, हिंदी नही जाणन वाला पाठकां रै घास्तै अंग्रेजी में अ्रेक सारगर्भित प्रस्तावना लिख देवण री रूपा करी. अनूप संस्कृत पुस्तकालय रा फ्यूरेटर श्रीयुत के. माधव कृष्ण शर्मा पुस्तकालय संरंधी सगळी सुविधावां कर देवण री उदारता दरनायी राजस्थान रा विख्यात अनुसंधान-कर्ता विद्वान श्रीयुत अग्रचन्द्र नाहटा सूं अ्रेक प्राचीन गीत संग्रह मिल्यो जके में घणा महत्वपूर्ण गीत लाधा. त्रैस रा अभ्यक्ष श्रीयुत प० श्रीराम शर्मा ग्रंथ री रूपाई में बराबर रस लियो. आं सारां ही सजनां रो संकळनकर्ता घणो अनुगृहीत है.

ग्रंथ में घणी त्रुटियां है पण गुणग्राही विद्वान आपणी उदारता सूं उणा नै निभा लेसी.

—संकळनकर्ता

राजस्थानी वीर-गीत

राजस्थानी वीर-गीत

[१]

गीत १

गीत-प्रशंसा

१

कली सेत मन पाळटे, पड़े जोखिम कळस,
पसै खुंभी, हुवै मंडप खांगौ ।
भीतड़ा भाजि ढहि जाइ धरती मिळे,
गीतड़ा नह जाय, कहै गांगौ ॥

२

बाघजत ऊचरै, सुणौ खट-तीस वंस,
जुरा आगळि रहे घटूं जाहीं ।
भोज वीकम तणौ सुजस सारै भुयण,
नर्रा, तिण घार रा मंडप नाहीं ॥

३

हुवै विग्रह ढहै, कहै चूंडाहरौ,
इंद्र पारक पत्रण विसण अेता ।
महिमंडळ भोंतड़ा कोन सुं मीदतां,
कळो पाळट हुवै, जाहि केता ॥

४

महल चौषार अदवां तणा माळियां
दिनै घोळीजत जुरा दहसी ।
मंडळ धू सथिर, अहराव सिर मेदणी,
राव गांगौ कहै, त्यां गीत रहसी ॥

राजस्थानी वीर-गीत

गीत २

खत्रिय प्रशंसा

१

बावन नै बळी त्यागियो सरवस,
दधिच अंगां रा हाड दिये ।
ख्यांत करे, खत्रियां जस खातर
कुण कुण कठिन उपाय किये ॥

२

प्राछे दियो मांस सिवी तन,
धृ करवत धज-भोर धरी ।
अत रजपूतां सु जस पियारौ,
जिण कारण छै अजर जरी ॥

३

पाइ हथां फन दांत आपिया,
रिख नै बेटा अवध-नरेस ।
इण कारण कीरत आदरियो,
दहसोतां मुसकल ओ वेस ॥

४

नीर भरयो हरिचंद ग्रिह नीचै,
गात सरा किइ रह्यौ गंगेव ।
जोयो, लियो घणी मूघो जस,
दियो फाट माघो जगदेव ।

५

महि चुरां दातारां माहे,
करि-करि रूपग पात कहै ।
जस रदियो अस्त्रियात जुगे जुग,
रहै घात, नह गात रद्वै ॥

गीत ३

चनिय-सन्तान-प्रशंसा

१

इम छत्रियां तगा वैत विहुं आला,
भूडइ कळू न कीच भरइ ।
कंवर सिनान फरइ किरमाळां,
कंवरी भाळां न्हाण फरइ ॥

२

रजपूतां जामण दुहुं रुडा,
वप जां रइ नह फळ वसर ।
सारं धार घसर सगमुख सुत,
धार अंगारां सुता घसर ॥

३

इइ राजवियां जाय विन्हे इव,
फळू कीच मांहे न फळइ ।
विजडां धार खडइ चढि घेटा,
वेटी काठां चढे घळइ ॥

४

स्याम-धरम पति-शत अति साधर,
अंग आराण आसगर आगि ।
छु जि मिलि जाइ जोत हुंतां अंग
लोदां मडां खाफडां खागि ॥

गीत ४

वीर-प्रशंसा

१

कहै फंथ नूं दुहं कुळ ऊजली कामणी,
बळां फौजां मिलै, खाग वागे ।
नानती तिकां नूं जिके भइ नीसरै,
जारला वंस नूं गाळ धागे ॥

२

सूरमा जिके रजपूत आवध सजे
लोह मिल्यै मनां सुजस लोभा ।
कनक-आभूषणां सोहजै कामणी,
सूर आभूषणां घाय सोभा ॥

३

साम रा काम नूं घसे दळ सामुहा
केवियां पछाइया फनै करणै ।
साबता रदयां निज सुजस फानां सुरणै,
प्राण छटां पछै सती परणै ॥

त्याग-प्रशंसा

दृढ

जग दिणियर पाखै जिसौ अंधारौ अदवाह ।
दंपै खिम सिसहर दिना देवळ विणि देवाह ॥

छंद

देवळ विण देव, करम विण दरसण,
बप यनिता भरतार विना ।
यामण विण वेद, विया विण वीरग,
गौज धनह विण जिस्ती मना ॥
रावत विण खडग, अदक विण राजा,
करसण विण धणियाह किसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
त्याग परै कुळ जलम तिसौ ॥ १ ॥

षाखिज विण साह, राहर हाटां विण,
जळ विण पांष बसै जेहसौ ।
विण गाया निष्ठम, सभा पठित विण,
विण महमा तीरथ तेहसौ ॥
मंजी विण राज, रतन विण पारिख,
विण रित करि पावस बरसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
त्याग परै पुळ जलम तिसौ ॥ २ ॥

राजस्थानी धीर-गीत

ससहर विण रैण, नीर विण सरबर,
पमंग जिसौ असवार पखौ ।
आदर विण भगति, देव विण आसति,
विण भायां ससार विखौ ॥
रंग विण व्याह, वेस विण शमति,
सुंदरि विण मिह-वास जिसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
त्याग पखै कुळ जलम तिसौ ॥ ३ ॥

नायक विण सेन, निमौ नेहम विण,
गम विण ठाडुर जिसौ गिया ।
सीपग विण मंदिर, जोग विण दरसन,
वास सुखह विण जिसौ वणां ॥
साहस विण पुरख, तेज विण साडुर,
जग जीवण विण मोज जिसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
त्याग पखै कुळ जलम तिसौ ॥ ४ ॥

गुण विण गरप, घंठ विण गायन,
वात अरथ विण जिघी बणा ।
नाकह विण रूप, नयण विण निरखण,
सुरत सवण विण जिघी सुणां ॥
वाचह विण साच, वाणि जीहा विण,
हरि कोई विण चूक हसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
त्याग पखै कुळ जलम तिसौ ॥ ५ ॥

[२]

गीत ५

बादल लाजा फूलाणी रौ

१

झल समपे जु तैं मांडिया, लाखा,
घाट सुकवि सबवारु घड़े ।
प्रसिध तणा प्रसाद न पड़ही,
पाखाणिया प्रसाद पड़े ॥

२

जातै जुगै न जाये, जादम,
धोखे अंतरि सुध धरै ।
सुसबद मंडप किया तैं साचा,
काचा जाइ काकरै करै ॥

३

कवि कड़िया रोपे काळा थिरि,
रिध मांडि ताइ सथिर रहै ।
ढहै नहीं जस तणा घबलहर,
घर मंडप साणवर ढहै ॥

गीत ६

राठौक पायू घांध्यौत रौ

आखियौ वांझिदास कहै

१

प्रथम नेह भीनौ, महाक्रोध भीनौ पछै,
 लाभ चमरी, समर भोक लागै ।
 रायकंवरी घरी जेया घागै रसिक,
 घरी घड़ फंवारी तेया घागै ॥

२

हुवे मंगळ घमळ दमंगळ वीर हक,
 रंग तूठी कमध जंग रूठी ।
 सघण वूठी कुसुम वोड जिण मीड़ सिर,
 विखम उण मीड़ सिर लोह वूठी ॥

३

करण अखियान घडियौ भलां फालमी
 निवाहण धैण भुज घांधियां नेत ।
 पंचार्ग सदन वर-माळ सं पूजियो,
 खरां किरमाळ सं पूजियो खेत ॥

४

सुर वाहर चढे चण्यां सुगह री,
 इतै जस जितै गिरनार आबू ।
 विहंड खळ खीचियां तरणा दळ विभाड़े
 पाँडियो सेज रण भोम पायू ॥

गीत ७

राठौर पावू घांघळीत री

गिरवरदान कर्दै

१

तणी घघावण नेत बंध घरण सोढां तणी,
तरण चंद यदगा फज वरण सावू ।
अमर कथ करण प्रथमाद सिर उमदा,
परणवा पधारे राव पावू ॥

२

भीण गंडजोड़ पद बांध कर भालियौ,
जठे वर वीदणी हेत जोड़ी ।
चारणां तणी वित घाड़ नै चालियौ,
घालियौ अगन में विघन घोड़ी ॥

३

नेह निज रीक री घात चित ना घरी, -
प्रेम गवरी तणी नाहिं पायौ ।
राज-कंवरी जिफा चढी चंवरी रही,
आप भंवरी तणी पीठ आयौ ॥

४

द्रीवृछड़ द्रीवृछड़ अक पग धरंती,
- कुळट नट-चटा ज्युं मक करती ।
काळका-चक ज्युं नावडो केवियां,
भडां सिर काळमी डक भरती ॥

५

ज्याग रा गीत सुण्य प्रीत न करी जिके,
 प्रीत हृद चारणां हृत पाळी ।
 धीत रै धादक दुषी जिणु धार में,
 धीत रज रीत घट तणी चाली ॥

६

भावतां देखि हम कियौ रंग धाड़वी,
 धाजता नगरां नावड़यो वींद ।
 जावतां अम्भ री अवे नह जाण दहूं,
 जठै पग थांभिया संभरी जींद ॥

७

हाक सुणं खीचियां नाथ नह हालियां,
 मूँछ कर घालियां बांध भाली ।
 अठी कुल उजाळण पाळ अधियावणी
 भुजळिं भालियां हाथ भाली ॥

८

विकट अग अटकिकि विहुंवे फटक विचालै,
 विषम सर हूटि घट छिटकि रहिया ।
 लोथ हूंतां पटै-माथा लटकिकि लटकिकि,
 रटकिकि वजि दुहूं दळ अटकिकि रहिया ॥

९

फेरि भुज सेल अळ बांधि जिम फांधळा,
 घेरि घण थटां जिवां तोड़णुण घात ।
 अळ अळां पत्र भरि जोगणी घपाई,
 अत्र घर धिनो जी धांधळां अत्र ॥

१०

चंद शंभै जिस्ता परत मन धर चंगा,
सांपरत करी तन कांच लीसी ।
घांघळा भूल राहत पड़े आग्रिदा,
विढा संग सांघळा सात-थीसी ॥

११

तेण दिन गाळियो खगां घळ तोलियो,
योळियो घचन निरमाहियो योळ ।
पाळवा साच मरि अमर रहियो प्रिथी,
काळमी सटै वित पाळवा कोळ ॥

१२

सकत रा हुकमी धिनो घांघळ-सुतन,
जगत धिन जिफा पित मात जणियो ।
फहै कवि गिरवरौ डकत परधाराण फय,
समदरां अळग धाखाराण सुणियो ॥

—

५३

कवियौ रामनाथ कहै

साळया हंसौ साय अरज करे छै आप ने ।
हथळेवा री हाथ जचियौ पण रचियौ नहीं ॥ १ ॥

पदवे नह पोदी सर कोडा विलखै भखा ।
चंवर बीच छोडी किम कर सोदी कामणी ॥ २ ॥

वरजै वाली वाम कर जोइया छनी कनै ।
श्रेक घडो आराम कर पाछे चढजाँ, कमध ॥ ३ ॥

यूं फिर-फिर आदी कमयज ने लाडी कहै ।
छनी, किम छाडी आधा केराँ ऊठिया ॥ ४ ॥

हथळेवौ नर-लोक पइसारे पर लोक मे ।
मुख विलसण सत-लोक जान सहीता जावस्या ॥ ५ ॥



गीत =

एलौर भरड़ा बूबावत रै

१

कर झेक करै, कर बियौ कंटारी,
 सुचवै भरड़ौ जीद सनां ।
 धायौ हि मांगूं घाहि बिन्हे कर,
 काकौ हि मांगूं तूभ कन्दां ॥

२

धामौ पाणि कणाउळि घाले,
 पाणि बियौ जमदद परठेय ।
 भरड़ौ कहै, मांटी होइ, जिदरा,
 बूडौ पावू मांगूं बेय ॥

३

घड़ विच धारालो राघ घांघळ,
 गाली सत्र सांकड़ौ ग्रहे ।
 वळे कहीं रा पिता धीसरै,
 काका ही धीसरै कहे ॥

४

केधी भरड़ै घाहि कटारी,
 केवी दिस ऊठियो कहे ।
 वळे कियी रा पिता घहे तूं,
 वळे कियी रा चचा घहे ॥

गीत ६

महाराणा हमर अबसियौत रौ

सौदा बारु रौ क्यौ

१

ईळा चीतीइ सहू घर आसी,
हूँ था रा दोखिया हरुं ।
अणणी इसौ कहू नह जायौ,
कैवै देवी, धीज करुं ॥

२

रावळ बापा जिसौ राइ गुर,
रीक खीक सुरपति री करुं ।
दस-सहसा जेहौ नह दूजौ,
सगती करै गळा रा सुस ॥

३

मन साचै नाचै महमाया
रसणा सेती घात रसाळ ।
सिरज्यौ गंठे अइसी-सुन सरिखौ
पकड़े छाऊं नाग पयाळ ॥

४

आजम कजम नवै खंड ईळा
कैळपुरा री मीढि किसौ ।
देवी कहै, सुण्यौ नह दूजौ
अवर ठिकाण भूप इसौ ॥

गीत १०

राठौर राव सलखा तीडावन री

१

अदिनार कहै भरतारां आगै,
तिगु निस-दीह रहे मन तास ।
वेरी सज्जब वडै जां यांसे,
प्रेहया तन री केही आस ॥

२

सामापगौ सिधहर सामी
तै न न केहौ रूप त्रियांह ।
सतहर पूठ जांह नवसहस्रौ,
जम हिय पखौ न जोखे अंह ॥

३

जगै सुर सुर आथमतै
तीडावत दूकड़ी तिगि ।
जाम घड़ी तिल दीब न जागिस,
गिणिया सांस सोहाग गिणि ॥

गीत ११

राठौच राव मल्लीनाथ सलखावत रौ

१

घाहाड़नगर घाराह विधूंसे,
 पूकारे नित पंडरवेस ।
 सुनर माल चर सलखावत
 डाढां माहि किया दस देस ॥

२

मुणियड़ वाहड़मेर मंडौवर
 घू पनमाळ चढावे धौड़ ।
 घूहड़ियौ वीजा ही धाखे
 रस खेधे हूगौ राठौड़ ॥

३

भांजे भोमि गुढी भिलवाडी
 घाकिम माल चरे वेड़ाय ।
 पगां हेठ पोहकरण पुगळ
 खात्राड़े खाडा बळ र्णाय ॥

४

गिड़ आंगवण न घ्राव गरवी,
 सान्न मारि माहि संग्राम ।
 मोथू माल चर नर मोग,
 गढा समेत गिल्लै नित गाम ॥

गीत १२

राठौं जैतमाच सबखापत रौ

१

पण ग्रहिया जैत मिलण कज पातां,
 अं अखियातां जगत अछे ।
 अटसट तीरथ पहल उघाये,
 पीठवौं ग्यौ समियाण पहै ॥

२

इधकौं रुधर वहे पग आचा,
 काचा देखे हियी कंपे ।
 सबप्र-समोभ्रम घणे हेत सुं
 जैत, मिलण कज आव, जंपे ॥

३

देखि फधी कहियौ चड दावौ,
 अमहां कमळ नह भाग इसौं ।
 सारे रसी वहे तन लड़ियौ,
 कहीं, मिलण चौं वैत किसौं ॥

४

फहतां हंसे मरहपियौ कमधज,
 जग इचरिजियौ देखि जुवौ ।
 वाहां ग्रह मिलतां सुरा धूमे
 हेम सरीर सरीर हुवौ ॥

५

घन-धन कहे प्रथी मन धारण,
 फळरु काट निकळंक कियौ ।
 दसमा साळग राम सदेवत
 दिन तिण पीठवं विरद दियौ ॥

गीत ११

राठीक राव बुंदा नीरमदेवोत

चारहट दूदी कटै

१

असुरां खुं किया कमंध असंकित
प्रघट प्रवाड़ा चिहूं परि ।
गढ गढपत चउंछै रायां गुर
मारे लिया स दीध मरि ॥

२

घारां दुहां अभिनमै नीरम
कापर नह जिम कीध किलां ।
घदि दुरवेस दुरग कीर्यां घलि,
दीन्ही घदियै दुरवेसां ॥

३

चारहटां बुंढराव चवीजै,
दीन्ही हम कीर्यां हम देस ।
पडरवेस पाड़ि गढ पैठी,
पदियै पैठा पंडरवेस ॥

गीत १४

राठौर राव रिणमल चुंदावत रौ

हरिसर छै

१

सिर संपति संग्रहे निहसे नित प्रति
 करि मर निय साहियै करि ।
 रेवंत पूढ वसै जइ रिणमल
 घास म गणि तइ वैरहरि ॥

२

कीजे रयण तणै छै कुळ कित
 वैरायां सुं वत अवत ।
 जई बहोनि स दोहिला जंगम,
 सोहिला तइयां म गिया सत ॥

३

सुजडाइथ चुंदराउ-समोभ्रम
 मै वीरातन वैर विधि ।
 रोपे जई पभंग आसण रिधि
 विम्र ची भोजै राज रिधि ॥

४

राव रिणमाल रीति रायां ची
 सेनाउळि मेळे सधर ।
 घायै तई उपावै अरि-घट्ट
 घोड़े जइयां करै घर ॥

गीत १५

राठौर राव रिङ्गमल चूढावत रौ

परमो कर्दे

१

अपूरव घात सांभळी श्रेही,
रिम चूके म्रित दिन, रयण ।
सुतै तहिज फाढी सुजड़ी,
जागत फाढै घणा जण ॥

२

चूक हुवे केइक चीतारै,
वाटे केइ चहंतै वाढि ।
पौढिया रयण जेम प्रतमात्री
फद ही कोइ न सकियो काढि ॥

३

अंत परजाई चूक अहाड़ा
अमदळि हुचं हुगौ ऊखेळ ।
रिणमल जेथ कियो रायागुर
मेळ जूज अल जमदढ मेळ ॥

४

शेअपियात, सलखहर-ओपम,
अगै न सुभी सुरअसुर ।
कर सुतै मेनियो फटारी
अग्यी सु फाढी मिसव-अर ॥

सोसीदिया चुडा लाखावत ती

१

चाबंतौ कोट पयंपे चूंडौ
 जै पुरसानन तणा अखर ।
 रण मुड़िये नांही जौ आपण,
 आगे पारि मुड़े अर ॥

२

तो ने रंग जसो, चीप्रीडा,
 वांच वेद तणो वयण ।
 रहनी आप जूम पग रोये,
 पड़े क पा छाडे प्रसण ॥

३

तोह पगार, फहै लाखावत,
 गैमर हेमर जेय गुड़े ।
 मुंह रावत जौ आप न मुड़िय,
 भरि आवे के प्रसण मुड़े ॥

महाराणा कूंमा मोक्ळौत रौ

१

कळहेवा चूफ कूंमकन राणा
जगत तणा गुर दुरंग जळ ।
काढ्यां अचरज किसौ फटारी,
काढ्या जिण पेंतीस कुळ ॥

२

सभिये प्रिसम लगे सुरताणा
राव मेवाडौ चढै रिण ।
बांक पंड किम तिण वाढाळी
जग अय पावोरिया जिण ॥

३

सुजडी मोक्ळसीह-ममोन्नम
प्रद्वै दुरंग गिर चडा अद्व ।
जिण चीनडिया किम चीसादे
प्रिथमी नर खड तणा पद ॥

४

करन नहीं, राणा कूंमकन,
जो तूं बळयत बाथ जम ।
मानव देव दर्शत न मानत
कळह कटारी तणी क्रम ॥

५

आणी असद जडाळी आहव
फूटनी धोह में फर ।
हुय तौ कळह कूंमकन होये,
न तौ असुर सुर नर अवर ॥

गीत १८

महापणा कुंभा भोकळीत तै

१

केकाण अरथ ऊतम कुंभकान,
 वसुधा लै, अंता घद न ।
 कळह म मांग, पयंपै केवी,
 मांग अवर वित जिफामन ॥

२

अथ लै, राणा, अभाळै अथकी
 भोग वियाप तणा मन भाव ।
 भूपत अेता भळपण भणानां
 भारत हुंकारा न मराव ॥

३

संपत लै मोकळती संभ्रम,
 धर संग्रह कर, रील धरौ ।
 विण हंकणै संग्राम धैरहर
 कहै जिफा बीजा स करौ ॥

४

साहसा समद सेन, सीसीदा,
 राणा तो सूं राय रिम ।
 अरथ घरीस करै लिर ऊपर,
 कळह घरीस न करै किम ॥

गीत १६

राव जोषा रिदमलौत रो

हरिसूर कहै

१

बहु रावां राणां चाद विवरजित
जोध कळह-वित्त जिफा जुई ।
वैराण्यां तुहाळां भंगवट
हव जाये कुळ-चाट हुई ॥

२

भारग वीरमहर कुळमंडया
मिलियो ज्यां तुं ग्रिभै-मण ।
मुडियां तणौ हुवौ रया भांहे
परियां गत जाये प्रिसया ॥

३

प्रवि प्रवि जोध पमंगि पडियाळगि
तो निहसता निवहि निवड ।
कहै ति किरि थापीकी बाधी
भुईं भाजता प्रिसण भड ॥

४

जाणियो भ्राज तूफप्रति, जोधा
धीर कळह-गुर खडग-धर ।
नहीं तिकीं सत्रहर अणनमियो
नमिया चहरै जिको नर ॥

गीत २०

ठाठे कांघळ रिमलौत री

१

खानारणे खंडे खड्ग घळ खाधौ,
खाधौ भे प्रथ ध्याज सु लाह ।
कांघळ फडं, रुंधिये केहर,
साथ किसी ताह किसी सनाह ॥

२

रिणमालौत कहै रिण रुघां
अचड तियागी घोळ इसौ ।
जूह-विडार किती जीव-रखी,
केहर रुघां साथ किसी ॥

३

जरद जड़े नह साथी जोवै,
पर-दळ दीठा पंचमुघ ।
बाध घळै न दीण थोलावे,
रावत वळियौ तेण इख ॥

४

सहर भडंग सराहि हाँद सिर
सारंगळां माथै सुजड़ ।
पंचमुघ साथ यणौ पाघरियो,
पांच खान पादे अपद ॥

गीत २१

सरबहिया जैसा कनाटैत री

१

मौड़ै घड़ सोरठ मेछ मणारंभ
बांह विलागा घर श्री बेय ।
महमंद साह करै माणेवा,
जायवा दियै न जैसंघदेय ॥

२

महमंद साह जेम घर मोटौ,
सरबहियाँ सँघणी समाथ ।
हेवै राइ जोड़ै हथलेवौ,
हिंदवां राव विछोड़ै हाथ ॥

३

पाट अक घैसे परणेवा,
पाट उधोर उथापै पाट
करग प्रहै महमंद साह धन्या,
करग विछोड़ै सुतन कवाट ।

४

पाण चढे जादव राइ परणी
पंडरघेस फन्हां लै पाण
जैसंघदे ऊमै किम जायै
सोरठ घैरडी घरि सुरिताण ॥

गीत २१

राठौड़ राव वीका जोधावत रौ

१

वमीखण जोय फणैगढ पैठौ, .
 मारु, सु प्रसन थियै मुरार ।
 घडां सेव फीधां, राव वीका,
 सेवग चडा हुवै संसार ॥

२

ईख वमीखण, वीक अलम घण
 नवसहसां आभरण नरीद ।
 जावै जिके सुपह, जोधावत,
 अणजाचक वै थियै अनीद ॥

३

अगुट वमीखण थापे लीकम,
 अेह पटंतर प्रिथी इन ।
 मोटा हुवै सेवियां मोटां,
 मुरधर-पत, अवधार मन ॥

४

रावण-बंधव राम रीकिये
 आपे लंका करि अचळ ।
 बिल जाय जिस्ता ओळगै, वीका,
 फेर मखै ताय तिला फळ ॥

गीत २३

एठौड़ राव वीका जोपावत रौ

१

धैरायां लाइ विसम छळ धीकै
हेकां कहै स हेक मन ।
दूका आइ सामठा देला
घारण च्यारे चरण घन ॥

२

वीकौ हेक चियारे घारण,
थोमे सकै नहीं छरि-घाट ।
सारसियाळां हुवौ सामुहौ
रोही सो फरतो रङ्गडाट ॥

३

धैरायां ऊयेइण धीकै
हेक रचे पह सधळ हियौ ।
आश्रे सीह तणी यह ऊपरि
कुंजरे चिहुं ओडीर कियौ ॥

४

सातब देदै सिखर सारिखा
बंगाली बणाघवळ ।
केहर वीकौ विचै कुंजरा
कठठै ऊवांसे कमळ ॥

५

जोर हाथ नावै जोघाउत,
धैरी विठै न दूजी धार ।
चुंहटी गा कुंटाळे चाखे
चार कि वन हाथिया चियार ॥

गीत २४

राठौड़ वीदा जोपावत रौ

हरिसूर कहे

१

सरवर नदि सघण कोडि बहु करिसण,
मांडे भाप अधिक मंडळ ।
वीर किसुं जोवें सडे वसुधा,
जळिहर लेखी तणौ जळ ॥

२

पालर अण्णत्रीठिया प्रिथी पुडि,
प्रिथमी अण्णत्रीठिया पुण ।
दीजे वीरम जगिदातारां
घण दानेसर विरिद घण ॥

३

मुहत कल्याण भाप बहु मंडे,
इम अवधारि कमध अण्णनीद ।
जळ आपिया तणौ कोइ जळिहर
निमिन्न न जाणौ वीर त्तिदि ॥

४

घडदातार धरिसतै धीडा,
मांडे अधिकौ भाप मन ।
घरा सरिस नित नित धाराहर
श्रीठ न दासै जोध तन ॥

गीत २५

राठौड़ दूदा जोधावत मेरतिया री

१

मोल न धारया कोह घोंभ न मेटघा,
 'कब दुहु धंग म कीया ।
 गारसादीन तरण गहि मरत,
 लीजै (जिम) दूदै लीया ॥

२

तसकर दुई न दूकी तांडे,
 जूवा पाण न जीता ।
 जूह विहार लिया जोधावत
 सिरिया खान सहीता ॥

३

खांडां खोपर घट घाइ घड़िया,
 सुडी सु पह समाणा ।
 दूदै हाथी इणि परि लीया
 सबखहरै सुरताणा ॥

४

बाह अडोळी कुरळै कीनी,
 घर सहु दूदै घहिया ।
 फूंकूं फाजळ गमबै गळिया,
 रोचतड़ी सुर रहिया ॥

गीत २६

महाराणा रायमल कुंभ-रणौत पै

१

घटे पूर पावस वहे रायमल रण चढे,
 नवौ भारथ मे दीठ नयणा ।
 घहे घानास, तू काय राते वरण
 जळ अघक, पूछियो गंग-जमणा ॥

२

कोड़ भइ फचरिया रायमल कोपिये,
 जुड़ण मोटा करे कुंभ-जायी ।
 रळतळे रुधर, रण-भोम रहियो नहीं,
 ऊपटे नदी-जळ मांदि धायो ॥

३

अजइ मेवाइ राय जीप भाजव तणा
 तुरक दळ रहचिया रायमल तीर ।
 असर-घइ तोड़ि ओहाळ मुंह ऊतरे,
 नदी नदियां मिले रातडौ नीर ॥

४

हुवे हींदू घड़ा सेन देवे हुवे
 मूक उपकंड संगराम मातौ ।
 घणौ सीसोदिये वहे छाई घड़ा,
 रुधर घण मिले, तिण नीर रातौ ॥

गीत १७

राठौड़ महाराज अखैराजौठ रै

रठनू भामौ बहै

१

माटीतण तणौ अरी घाह मिलतां
 हुविअै समहरि अंतर हुवौ ।
 अरिजण गोपि-ग्रहणि औहयियाँ,
 महिराउणि गो-ग्रहणि मुवौ ॥

२

घागै अने अने धाड़ीते
 लये लूटि अंज पसरि लयी ।
 ऊमै गयी ज गोपी अरिजण,
 गायां पड़ियै मिहर गयी ॥

३

सुत अखैराज मुवौ चढि सरे,
 गहणि गोपि अने गऊ ग्रहणि ।
 रणि संतनहरौ न चढियाँ रुके,
 रयण फलोघर चढे रणि ॥

४

पांडव मरे न सकियौ मिदि भुइं,
 रुके चढे मुवौ राठौड़ ।
 किसन तणी अतेवरि कारणि,
 महिर घेन कारणि कुळ मौड़ ॥

गीत २८

महाराणा सांगा रायमलौठ रौ

१

पड़े बुंय ढीली सदर, सोर मांडय पड़े,
सुपह उज्जेण लग थाह साजै ।
घार पतसाह चै हाथिया बाधिया,
घार पतसाह तुं न साम वाजै ॥

२

फटक धंध सभे चीतीड-पह फळहूतै,
चडा राणा तणा विरद बहिया ।
गैमरां तके सुरताया रा ग्राहजै,
गैमरां धणी संग्राम गहिया ॥

३

सार अंकुस सहे भालवत समर भर,
मळे चांपानयर ढीबड़ी भाण ।
जड़ग धळ खांभिया किता खेताःरै
सौंदुरां बसकरां सहित छुरिताण ॥

गीत २६

महाराणा सांगा रायमलौठ रौ

१

छंदां लख गेर पवै खूमाणो,
रोसावण रीसाणो राण ।
सांगी बंध त्रिया नह साहै,
सांगी बंध साहै सुरताण ॥

२

रोहणियाळ सभे रायां गुर,
घाये असुर उतारे घाण ।
अवळा - घाळ न धारै आडी,
खूदाळम घातै खूमाण ॥

३

सामे मेळ सुजइ जस धरिये,
कळकळ कोप कियै कमळ ।
गाळा - बंध महल नह घातै,
गुण घातै पनसाह - गळ ॥

४

असमर गहे कळम किय आचट
विढतै घड़ा फंवारी व्यंद ।
मेछां तणौ प्रवाड़ी मोटी
नव ढंढ हुधौ राण नरियंद ॥

गीत ३०

महाराणा सागा रायमलौत रौ

१

इयराहिम पूरध दिसा न उळटे,
 पळम मुदाकर न दे पयाण ।
 दखणी महमंदसाह न दाँदे,
 सांगी दामण त्रिहुं सुरताण ॥

२

साह हेक दस हेक न सामै,
 विदस न सामै हेक वण ।
 सुजसै राण रायमल-संग्रम
 जेखळिया पतसाह जण ॥

३

साई सुरी गमण न सामै,
 लीह नका^० लोपवै राग ।
 थापाहरै घळाक्रम बांधा
 पतसाहां त्रिहुं तणा पग ॥

गीत ११

महाराणा सांगा रायमलौठ रौ

घोदो बारहट भमणो पालमौठ कहे

१

सत धारजरासंध आगळ स्त्रीरंग
विमुहा टीकम दीघ घग ।
मेलि घात भारे मधुसूदन,
असुर घात नाखे अळग ॥

२

पारथ हेकरसां हथणापुर
हृदियौ त्रिया पडंतां हाथ ।
देख, जका दुरजोधन कीधी,
पछे सका कीधी कांइ पाथ ॥

३

इकरां राम तणी तिय रामण
मंद हरे गौ यह-कमळ ।
टीकम सोहि ज पथर तारिया
जगनायक ऊपरां जळ ॥

४

घेक राइ भव मांहि ओहयी
धौरस आणो केम उर ।
माल तणा, केवा कज मांगा,
सांगा, वृ सालं असुर ॥

गीत १२

महात्मा बांग रायमल्लोत रो

१

ऊगां विण सूर खेहवौ अंवर,
दीपक पाखै जिसौ बुवार ।
पावस बिना जेहवी प्रथमी,
सांगा विण जेहौ संसार ॥

२

विण रिय बोम, कसण जोती विण,
धाराहर विण जसी घर ।
जैसीहरा, जिसी जाखेवी
तो विण प्रथमी, कळप-तर ॥

३

जळहर गयो दुनी - जीवाङ्गा,
फवै नहीं दीपक फरक ।
साहां प्रहण मोखणौ सांगौ
घायमियो मोरो अरक ॥

गीत ३३

भाला अजा राजधरौत गौ

१

पड़ियों नेजाळ चिढे पाटरियै,
भंगघट वाट न क्रम भरिया ।
अजमल तणै खड्ग रै ओळै
अधिपति मोटा ऊबरिया ॥

२

सेलां मुंहे राजधर-संभ्रम
ढाहे सगळ मूगलां ढाल ।
रावळ राव उबरिया राणा
ओळै तूक तणै, अजमाल ॥

३

भालै भार साथ सू भाले
सिंघ सार ... जिहीं सहा ।
राणा घडै उबरिया राणा,
रवि ऊमै त्यां घोळ रहा ॥

गीत ३४

पादव गह्वर हमीरौत रौ

बारहट घासौ कहै

१

काछि फाछि घन कीधी फाया ।
ऊलसिं श्रंघ उअह धर आया ॥
रित तिण साहय पावस राया ।
सुकवि चलावि, मबार सुदाया ।

२

चढती कंठळि वीज चमफकै ।
झड़ माचंतै सुकवि भणफकै ॥
ऊनइहरा, इंद्र ऊवफकै ।
गुणियण मोकळ, सिंहड़ गहफकै ॥

३

आणंद मोर सु सरि आवाजै ।
वीणा वंस मधुर सुर वाजै ॥
भुरजे भुरज मिड़ंता भाजै ।
गहड़, सीप दै शंवर गाजै ॥

४

भाप करे सर सुमर भरिया ।
घरती रूप अनेरा घटिया ॥
हमीरौत, हुवा गिर हरिया ।
सीख समापौ, घर सांभरिया ॥

गीत ३५

राठौर सेखा सूजावत नै गांग बाधावत रै

१

बापीकी भोमि बरावरि यौले,
घड़ त्रि सरूप रचे घण घाह
सुरा घट उजवाळी सेखै,
रावा घट उजवाळी राह ॥

२

लोहि सरगपुर सेखै लीयौ,
लोहि प्रवाड़ौ राह लियौ ।
धरती कजि घड घडा धरपती
करता आया तिसौ कियो ॥

३

इळ छळि थाट घडा ध्राफाळे,
थानिक मोटै घात थयी ।
जिम दीजै तिम सेखै दीधी,
लीजै जिम तिम राह लयी ॥

४

तुडि हेव गयो मरण दिस ताणै,
पुश्चि लयी हेक तूगपणै ।
सकजा विह नहीँ कोइ सासौ
सिखर गग धरि सुर तणै ॥

गीत ३।

राठौड़ राव जैतसी लूणकरणौत रौ

१

खरै खेत खुरसाण रा पिसण हुय पाहुणा,
 धींग राठौड़ ची धर धाया ।
 सरां सारां मुहे सेन सुरताण रा
 पिड़ चढे जैतसी राव पाया ॥

२

नामियो अतमंधी तीठ कीधी नहीं,
 समर भर पियो पलिसाह साथै ।
 सार औराक चीकाहरै साहिया,
 मांड हंकार तां दीघ माथै ॥

३

खोड़तां धूमतां असुर जोटा खिया,
 मिड़ण भाठी त तीपियो भमरै ।
 हुलां प्यालां मुहे ठेलियो हींदवै,
 करण रै नामियो, पियो कमरै ॥

४

ऊकरड़ अक अकां पड़े ऊपरै,
 नारि संभार सै कंत नाया ।
 मरण मद मलौ दीधौ खलां माख्यै
 पंडराबेस पीठाण पाया ॥

गीत १७^१

रूपावत एठोइ भोजराज सादावत ते

१

प्रगटां पंडनेस सुपह सांचरिया,
वाजी हाफ, न फोइ वलै ।
बाबा चंद ऊठ अतुळीशळ,
भोजराज, गढ तूफ मिळै ॥

२

आवौ जिके मरण-भय जायं,
रहतां नयाँ ज साथ रहै ।
सिर साटै देसै सादावत,
कोट, म वीहे, भोज कहै ॥

३

घोकानयर भोज घाढालै
सत अण्डिमे घाढियो सरीर ।
रूपाहरै रापियो रुही
नहचैई ऊतरतौ नीर ॥

गीत ३८

सांघला महेस फल्याणमलौव रौ

१

इम फहै महेस घडे प्रथ आयै
गहि असिमर दासिये गहि ।
महि मो सुंपी राग मारवै,
माथै साटे देहस महि ॥

२

खग ऊड़जिये अभंग सांघलौ
घदै फलावत धीर घर ।
धर मो सुंपी जफा मो धणी,
धू पाळटि पाळटिसी घर ॥

३

पीथलहरौ अभंग मोटै पद,
छळ पद परियां तणै छळि ।
पग देसी, मधकरौ पर्यपै,
कमळां पाळटियै कमळि ॥

४

चंद सूर लग नाम चढावे,
करि जस समंदां तणै फहै ।
सुरां मरण सामि-धम साटी,
धसुधा दीन्ही त्रिगुट घहै ॥

गीत ३६

सांखला महेस कल्याणमलौत रो

१

मिटियै निज दलै मिटतं जौ मघकर,
सुर खत्री भंगवाट सहि ।
मेर डिगत, सायर क्रम लोपत,
अरक मिटत, इळ तजत अहि ॥

२

फलियाणौत भाजतै फटकै
अरि अंत देखि घचत जौ भंग ।
मेरु खलत, अजा दधि मूकत,
पळटत तरणा, पंकत धर पंग ।

३

पूनाहरौ मुघौ दळि पळटै
दीपावे जांगळवी मेस ।
सुर-गिर सधिर, कार बध सायर,
सूरिज सतप, भार भक्ष सेस ॥

गीत ४०

सांखला महेस करयाणमलौत रौ

१

रिद्ध गा रखपाळ हुना जे राउत,
घणू आवियो थाट घणौ ।
गढ नागौर समरियो गाढौ
तिण घेळा फलियाण तणौ ॥

२

मांमी जिके हुता गढ मांहे
खिसि गा आयै मरणा खरै ।
इम लीजतौ नगीनीं आखै,
मधकर हुचै त तूटि मरै ॥

३

असतां भडां तखत इम आखै,
फळि जुगि अमर न हूवौ फोइ ।
अत्र दिन वीकानेर महेसै
जुडि अजळौ कियो तिम जोइ ॥

४

सबळ अचड नाकोट सराहै,
साराहै अधियात सुर ।
प्रिथम-फळोधर पडिया पाछै
प्रिसये. लीधौ वीकपुर ॥

गीत ४१,

घाडेक्ष सिवा रौ ।

घफरूर न जुजठळ, भीच न अरिजण,
 पळ-दळ लाग, खोद खिंधी ।
 पड्ढतै भार प्रजा पीडुंती,
 श्रीरंग फहियौ- सिचौ सिधौ ॥

२

भरघ न सत्रघण घळमद्र भीरी,
 बंधव लक्षण न पूगी घेल ।
 ओळामंडळ विटियो असुरां,
 वीठल सादचियाँ घाडेक्ष ॥

३

शेकी हि जादम भीडू न आवै,
 रीद पेस उग्रमेण रहै ।
 आवै हण न, गुरड नउ आवै,
 कमघ आव, रिणछोट फहै ॥

४

शेकी साद करंता आवै,
 आप मुघौ, मारिया अरि ।
 पीजर सिघा नरै पग परठे
 हाथ लगाये पछै हरि ॥

गीत ४९

सरवहिया धीजा ददावत रौ

धारहट ईसरदाष ऊहे

१

रंग रातौ चीन फचट-हर राजा,
 अवरं हूंतौ ऊतरियौ ।
 तौ मुख दीठै लाय तियागी
 विजा, जगत सहु वीसरियौ ॥

२

विजमल, तुभ दीठै वीसरिया
 सयळ तगा भूपति सिगळेय ।
 दूजा तीह भञ्जे किम इंगर,
 निरख्यौ ज्यां सुरगिरि नयणेय ॥

३

अनि जळ तीह धियै किम धारति,
 जमण-गग-सट घसिया जाइ ।
 दीठै तूभ पळे, दूदावत,
 वृजा सुपह न आवै दाइ ॥

गीत ५३

सखदिया बीजा दूरावत रौ

थारहट इसरदास कहै

१

बै जाणै विजौ, विढण विधि जाणै,
जाणै नाद, वेद गुण जाण ।
जिकूं हेक भगवाट न जाणै,
हेकै नाकारै अणजाण ॥

२

दियण-विढण भमियाळ दूदउत,
साच सीळ भमियाळ सही ।
भाजेवा भमियाळ न भागधि,
नाकारै भमियाळ नहीं ॥

३

पिगळ भरह पुराण परामन,
विध विध जाणण सयळ विमेष ।
जैसाहरी न भंगगट जाणं,
उतर फर न जाणै भेक ॥

४

आण प्रवीण विजौ अस प्राहग,
फरणीगर सहू विधी कियो ।
मम फायरा खरणा मपगां रा,
सु तां न जाणै सरदियां ॥

गीत ४४

सरवहिया करण जीवावत रौ

बाहट ईसरदास कहै

१

घानंतर मयंक हण सुक धावौ,
 * नर पाळग 'रुद्र' रिख निवड़ ।
 श्रेक वारड़ी करण उठावौ,
 वन खट तंशौ प्रियाग वड़ ॥

२

जो नू करण नहीं जीवावै
 सरवहियाँ दीनां चीं साम ।
 तूक तंशौ ओखध, घानंतर,
 केहै पळे आविस्यै फाम ॥

३

करण जीविस्यै मानिस्यै गुण फवि,
 कितै जगत चा सरिस्यै फाज ।
 अमी सु केहै फाम आविस्यै,
 आपै नहीं ज, ससिहर, फाज ॥

४

ऊमौ करौ ओखदी आणे,
धीर सांच मन जेम धरै ।
हणवत, प्रसिध लक्षण ची हवड़ां
कवण मानिना लोक करै ॥

५

सबदी घहिस्यां तूक तणौ, सुक,
नीपण जंपां जु आंक निळाडि ।
अप कजि असुर घणा ऊठाड़े,
अम्ह कजि करण्य शेक ऊठाडि ॥

६

समंद-सुतन, सुत-पवण, मिरग-सुत,
ओखिद म्रित भापौ ऊदार ।
ऊमौ करौ चियारे छाये,
सुत विप्रमल बट यरन सधार ॥

—

गीत ४क

षाण रायळ लाखावत रौ

बारहट ईसरदास कहे

१

नफ तीह निवारण निरळ दाय नावै,
 सदा वसं तटि जिके समंद ।
 मन वीजै ठाकुरै न मानै
 रायळ ओळगियै राजिंद ॥

२

मेट्यौ जेह धणी भाट्टेसर,
 चमवत अवर चढै नह चीत ।
 पास विळास मळैतर धाती
 परिमळ धीजै करै न प्रीत ॥

३

सेवग त्दारा, लखा-समोभ्रम,
 अधिपति वीजां थया अकूप ।
 रइ किम करै अवर नदि, रायळ,
 रेवा नदी तणा गज रूप ॥

४

कवि तो राता, धमळकळोघर,
 भावटि भंजण लीळ भुवाळ ।
 खहुवै सरै वसंता लाजै
 माणसरोवर तणा मुणाळ ॥

५

पाधू माळ पतग गज पंखी,
 किहीं न धीजै सेव करंत ।
 राउळ समंद मळैतर रेवा
 मान-सरोघर, मन मानंत ॥

गीत ४७

जाम रावल लाखावत री

बारहट ईसरदास कहै

१

जुग भल श्रीराम सुगायै जाये
माहरौ भेक संदेसौ, मेह ।
दुख तूं तणौ भांजिसै तिण दिन
दिन जिण राप थासै देह ॥

२

कहे संदेसौ, जलहर फाळि,
जाये भाग रावल जाम ।
रहिस्ये नहीं भग्नीशौ रोवत,
राख धियां विण आतम राम ॥

३

राउळ रा बालदा, राउळ नूं
सघण, फहे जाये लग लोह ।
तूक वियोग टलै ते तागुंष
कुडि होमी विण अछै न कोइ ॥

४

वचन अेह प्रमणो राजा वर,
जाये जलहर अ्योथ जई ।
जळे भसम पिंड होइस्यै जइयां
तहारौ दुख भांजिस्यै तई ॥

५

सघण, अेद वायक न सुणापी
लाखाउत आगळो लहेइ ।
तू विसरिस तइयां जइयां तिण
दिग हुरसै रज तणौ धिखेइ ॥

गीत ४६

जाम रावळ लाखावत रौ

बारहट ईसरदाघ कहै

१

कहिस्पां ती तूफ भलौ, करणाकर,
वधि श्रेकणि सहु घरें विचारि ।
रावळ जाम सरीखौ राजा,
घळे घड़िस जौ बीजी चारि ॥

२

पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पालण,
दळपति दियण दोखियां दाव ।
भधि कोइ घड़िस त भलौ भाखिस्यां
रावळ जाम सरीखौ राघ ॥

३

लीख विळास जिसें लायाउत,
जुगति किसी ह्वि जाणसि जोड़ि ।
भागी श्रेकणि निमल भांप्रतै,
करतै फळप जाइसी फोड़ि ॥

४

जे पिण घड़िसी जुगै जाइतै,
भाजण-घड़ण-समथ भगयान ।
सकिस नहीं कोइ घड़िली सिरजे
राजा सु घर रीति राजान ॥

गीत ४७

जाम रावळ लाखावत रौ

बाहट ईसरदास कहै

१

जुग भल श्रीराम सुणायै जाये
 माहरौ भेक संदेसौ, मेह ।
 दुख तूं तणौ भांजिसै तिण दिन
 दिन जिण राख थाइसै देह ॥

२

कहै संदेसौ, जळहर फाळा,
 जाये घाग रावळ जाम ।
 रहिस्यं नहीं घम्हीणौ रोवत,
 राख वियां विण आतम राम ॥

३

राउळ रा घाल्ला, राउळ नूं
 सघण, फहे जाये स्रग लोइ ।
 तूक वियोग रळै ते तारांघ
 कुडि होमी विण अळै न कोइ ॥

४

वचन श्रेह प्रभणो राजा घर,
 जाये जळहर ओथ जई ।
 जळे भसम पिंड दोइस्यै जइयां
 त्हारौ दुष भांजिस्ये तई ॥

५

सघण, श्रेह वायकः न सुणावी
 लाखाउत घागळो लहेइ ।
 तू विसरिस तइयां जइयां तिण
 दिग हुइसै रज तणौ चिखेइ ॥

छंद

संमिलै धारह मेव सामणि श्रंघ धारा ऊछळै ।
 धावीह दादुर मोर बोळै खाळ चहुं दिसि खळहळै ॥
 रुद्र मचे सिहरे वीज चमकै वळे शनळ फरहरै ।
 राजिद पावा जाम रावळ सामि तिण रति संभरै ॥ १ ॥

मादवै नीर निवाण भरियै गिर पहाड पत्ताळियै ।
 मिलि छपन कोड़ी मेवमाळा नदी पुरि हिमाळियै ॥
 बेवूनि लूयां सामळी घद कंड्यी जळहर करै ।
 राजिद पावां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ २ ॥

ऊनमे अति घण मास थासू नीर नदिया त्रिममळ ।
 वन अधिऊ छह्यै द्रम्मपेळी चंद व्हे चडती कटा ॥
 नीवेद करिवा पित्र निहसै निरख वेदन घीसरै ।
 राजिद पावा जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ३ ॥

कातिगा मास थयाम त्रिममळ मेघ चाले घर सुणी ।
 सर कमळ निगसै सरद रपणी नीर छाह्य पोइणी ॥
 नळ पद्रिम थंभै गरज ऊतर अरक दृष्टिख मन धरै ।
 राजिद पावा जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ४ ॥

मागमिर महारथि माग मूळै मेघ मूळै दामिणी ।
 करि कोट बाली सीत चमकै तपै पटु वर कामिणी ॥
 घड छया नीर पयाळ वामत रजी दह दिसि उम्भरै ।
 राजिद पावा जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ५ ॥

मिलि हेम ऊतर पोड माये पत्र तरतर हावै ।
 संकडै परिमळ कमज घूळ भमत पंग न सारवै ॥
 धूनंत धानर गळ निरधन नाग रा पण नीसरै ।
 राजिद पावां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ६ ॥

उत्तराघ लहरै, संक लागी प्रळ घनरंड प्राळळै ।
 शंब होय विलमो, अगनि अग्रित सीत चा दळ साळळै ॥
 दीरघ रपयां, सोड दिन करि माड माग दमदुहरै ।
 राजिद पावां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ७ ॥

निसि घटै फागुण दीह ओसम धनिक पंच संवारियै ।
 मिलि हेम उत्तर चाल रवि-रथ दिखण पंच निवारियै ॥
 खिति लोग रामति फाग खेलै होळिअ-प्रव विसवरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिय रत संभरै ॥ ८ ॥

मंजरै अदभुत चैत्र मासे पांगरै पत्र कोमळ ।
 सी जाय घर दिसि, घान प्रगटै हुवै थंवर भिम्मळा ॥
 वणराय भार अडार फूटै दहणि माया ऊतरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिय रत संभरै ॥ ९ ॥

वैसाख मीरी फळीजै वन पसंत अन्नित आणियै ।
 केतकी जायक हसै कुसुमे भमर लीला माणियै ॥
 मद्द कंठ चंपल बेलि दुमणौ अधिक परिमळ उभरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिय रत संभरै ॥ १० ॥

घरतियौ जेठ क लुयां पागै धोम नळ हाळहळ ।
 दिनबधै, घटिनिसि, तप दिवायर जगि हुवै प्रीतम जळ ॥
 फळ अंब, नारंग दाख पाचै मालणी घावां भरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिय रत संभरै ॥ ११ ॥

आसाठ अंबर मने ऊवां गदल निद्रा अत घयी ।
 लू जाय नीसरि, गरभिजै जळ कुवर डौली कंकथी ॥
 वीजळा चमकै बळै वादळ ऊन बाल स उत्तरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिय रत संभरै ॥ १२ ॥

कवित्त

आसू कातिग कडा साम भादवै ज सामथि ।
 माह पोह मगसीर चैत वैसाखां फागणि ॥
 सालै जेठ असाठ दानि लख कोदि बरीसण ।
 कळिजुगो बळि दरथ रदास भरवां वगसापण ॥
 यारहै मास चौहंस पर बढहय वेधि न धीसहं ।
 मदिपळ माल पातां मिले सहु रत रावळ संभरं ॥

जाड़ेचा जसा हरधमळौत री

भारद्व ईसराद रा कट्टे

१

तिब्ब-तिल तन हुवै तणो जद तूटे,
 तण तलछे तरवारि तणो ।
 लख ढळ सरिस लत्रगादर दीपक
 जसौ जूभियौ साठ जणै ॥

२

पंखि भखै किंसू अगनि पहासै,
 छाये किंसू संकर गळि लेय ।
 घप जसराज तणो घाय विदतै
 लोइ धार रहियो खानेय ॥

३

उमग न अमंगळ, मंगळ न आठे,
 ईस न उतवंग उपगरियो ।
 सामा तणो सरीर सिगळहो
 आवघ धारा ऊतरियो ॥

४

विइंगे हुयो न चीनी पिसनर,
 भय ही तणै न जायो भागि ।
 घइ धमळोन तणो राग धारां
 लिंगि लिंगि गयो अगासं खागि ॥

५

पंखि भअौ, वळे अगनि प्रगासौ,
 त्रिनयण रुंड धगं फंड तार ।
 फइतळ फटक फोट फळइंता
 जस तणै फर पड़िया जाइ ॥

गीत ५०

माला रायसिंघ मानसिंघोत रौ

बारहट ईसरदास कहै

१

तुरक मुगर ताणीजतै सहु कोर समरियो,
सुर सुपह अवर नह काज सीधा ।
करणा संभारियो त्यार करणाकरण,
कवी रामस्यंघ दिस साद कीधा ॥

२

बंदरिण गज इन्द्र प्रहि बान कीधी विहं,
हेवे ने भुगर लै जाइ हेला ।
घाउ हो घाउ हो राण धरणीधरणा,
घाघहरि सारिखी हुई वेळा ॥

३

परण नै इन्द्र विजपाळ नै वीरभद्र,
राइ तन देव सहि देखि रहिया ।
मानउति महमहशि पार मोचाविया,
गद्दकवि गोरियां प्रहि प्राहिया ॥

गीत ५१

चौहाण अगमाल जैसिघीत घाचौ॥ रौ

१

कुंवर कासीस कळि मृळ करि माभिर्या
जुइण तो चीत, जैसिघ-जाया ।
विदण करि विदुर वरजागहर घाघळा,
ऊठि, जगमाल, अरि थाट घाया॥

२

रहीपौ आप गढि अणभंग रावां तिलक,
गोरियां हींदवा सेन गोहे ।
सोम सातल हमीर जिम सामहौ
सार घाहत अगमाल सोहे ॥

३

सामळी घड़ा जिम मन्हपतौ सामहौ,
विसरि दुहुं दळां तूर घागै ।
कहै अगमाल इम कान्ह जिम कळहतौ,
मूक ऊभा कवण कोट मागै ॥

गीत १३

पमार पंचायण रौ

१

माटीपण नमौ मूवहर माझी,
 भव लग पांचा घडा भइ ।
 अकबर दिसे ठेलती अरि-दळ
 धू पड़ियां किम गयो घइ ॥

२

पायक-घट तुम्ह नमौ, पंचायण,
 हय-दळ गयंद चढावे हीक ।
 परि केही पतिसाइ पहुंती
 माया धरण गयं, मळरीक ॥

३

खखधीरउत मीकतो लख दळ
 कमळ पड़े अखियात करै ।
 हिया तणी चख पांची हाले
 खूदाळम गौ जीव खरै ।

४

उतधंग ढळियौ भिकतो असुरां,
 नीधक तन ऊडवे नभीक ।
 अकबर गयो पंचायण ओळखि
 मारि-मारि करतौ मळरीक ॥

गीत ५३

पठौड़ देवीदास जैतायत रौ

१

नघ फोटां तिलक नमंतां नियं दळि,
नामित घात्रे खेड-नरेस ।
गह दापयत किसू, रणा गहिला
देदा, पछौ भंडोवर देस ॥

२

हेकां भडां तणी संगि हावति,
दळ-नायक भाजतै दळि ।
पुर पड़िहार सरिस पतिसाहं
यांकिम धोलत किसै बळि ॥

३

चात्रीजती धरा दळ चलतै
चढि चापड़े न वाहत चोट ।
किलंश राइ, जैत रा केसर,
कळिया हुवत पछै नवकोट ॥

४

भागौ हुवत तुही दळ भागै,
भह राठौड़, पड़तै भार ।
नर फर वागि तणा नखतहसै
आखत गरब किसै आसार ॥

गीत ५४

राठौड़ प्रिथीरज जैतावत रौ

१

राणी, मम रोह विथौ रिए रीधल,
 रिए गा छाडि तिके भइ रोह ।
 घण जूभै रिएमाल तरण घरि
 हुवै मरण तिम मंगळ होह ॥

२

पीथलतणौम करि दुख पडि अछि,
 दिह गा तजि करि ताह दुख ।
 आदित बेह अखां घरि अगै,
 सार मरण घण घणौ सुख ॥

३

म करि अदोह जेतउत मरतै,
 आया भाजि सु रोह अयार ।
 अै कुळ वाट सदा अख-राजा,
 चढतां फुते मगळचार ॥

गीत ५५

राठौड़ जैमल धीरमदेवीत रो

१

ढीली-पहि आयै राणु ढीलियै,
तेम कहै चीत्रागद तूभ ।
जैमल जोध, धार तू जेही,
मारवा राव, म ढीलिस मूभ ॥

२

अकधर आवतै उदियासिघ,
चत्रै ढील कीधी चीतौड़ ।
मोटा छात जोधहर मडण,
'रखे स मो ढीले, राठौड़ ॥

३

खीज करे चढियौ खुंदाळम
घणा कटक बध मेलि घणा ।
गढ नायक गा मेलिह, कहै गढ,
तू मत मेल्हे, धीर तणा ॥

४

जपे भेम दुरग दिस जैमल,
हू रजपूत धणी रौ राण ।
सांक म फरि ज्या मो सिर साजौ,
सिर पड़ियै लेसी सुरिताण ।

गीत ५६

राठौड़ जैमल वीरमदेवौत रौ

१

चवै श्रेम जैमल, चीतौड़, मत चळवळे,
 छेड़ दुं थरी-दळ, न दुं हाथै ।
 ताहरै कमळ पग चढै नह ताइयां,
 माहरै कमळ जां खचां मःथै ॥

२

घड़क मत चीश्रगढ़, जोधहर धीरचै,
 गज सश्रां दळ्यां करुं गज गाह ।
 भुआ खं मूफ जद कमळ कमळां भिल्लै,
 पछै तो कमळ पग देइ पतिसाह ॥

३

दूद कुळ-ब्याभरणा घुहड़हर दाखवै,
 धीर मंड, डरै मत करे धोखौ ।
 प्रिथी पर माहरौं सीस पढ़ियां पछै
 जाणजै ताहरै सीस जोखौ ॥

४

साथ आगै क्रियां वीर रौ सींधलौ
 हाम चित पुरवे काम ह्यषाह ।
 पुर अमर कमध जैमल पाधारियो,
 पछै पाधारियो कोट पतिसाह ॥

गीत १७

राठौड़ जैमल वीरमदेवौत रौ

१

गज रूप चढया, अंग रहण असंभ गति,
पुहप कमळ देसौत पगि ।
जिम जगदीसर पूजतौ जैमल,
जैमल तिम पूजिजै जगि ॥

२

गज आरोहित घड षड गढपति
चौसारा धरि धंदै चढया ।
वीर तयौ अरचतौ विसंभर,
तिम अरचीजै आप तण ॥

३

मोटा पडु आराध करै मदि,
मोटै गढ लीअतै मुचौ ।
जगि हरि-भगत, तुहाळौ, जैमल,
हरि सारीअ प्रताप हुचौ ॥

४

रधि हाथ ऊरु सम धर रेद्यगि,
मदिपति पग तिस श्रेक मण ।
प्रम कमधज जिण थडिम पूजतौ,
आप थडिम सुजि आचरण ॥

गीत १८

उठौं चंद धीरमदेवो मेइतिया रौ

१

चौरंग चूरिया घर सेत चांदै
मिड़े नचली भांति ।
गोरड़ी काढ़ै गात गोखै,
रई गळती राति ॥

२

भरतार चांदै मिड़े भागा
धड़छिया खग-धार ।
सामवै झावणां तणी सेझां,
हरम भौड़े दार ॥

३

साभिया धीरमदेय-संभ्रम
मछरि चढि रिण मीर ।
कर मोड़ि वीवी तोड़ि कंफण
नयण नाखे नीर ॥

४

मारिया चांदै मीर मांझी
खड़ग चढि करि धत ।
सारंग-नेणी, सु-सर सारंग
सु-वर संभारंत ॥

गीत २३

राठौड़ चांदा धीरमेवौत मेइतिया री

१

ढालां ढोखां धर ढींचाळां,
 जुड़े न कमधज किरमाळां ।
 जे जुड़सी कमधज किरमाळां,
 ढाल न ढोख न ढींचाळा ॥

२

गाजां बाजां धर गेंद गढ़ां,
 जुड़े न चांदी रौद-घढ़ां ।
 जे जुड़सी चांदी रौद घढ़ां,
 गाज न बाज न गेंद गढ़ा ॥

३

कोटां फूटा धर कमसीसां,
 जुड़े न चांदी जग्गीसां ।
 जे जुड़सी चांदी जग्गीसां,
 कोट न फूट न कमसीसां ॥

४

रागां टोपां धर धगतियां,
 जुड़े न चांदी पत गरियां ।
 जे जुड़सी चांदी पत गरियां,
 राग न टोप न धगतियां ॥

श्लोक १०

राठौड़ महाराजा रायसिंघ कल्याणमलौत रौ

१.

पानाळ तठै बळि, रहण न पाळं,
रिघ मांडे झग करण रहै ।
मो भ्रितलोक राहसिंघ मारै,
कठै रहूं हरि, दळिद्र कहै ॥

२

धीरोचंद-सुत अहिपुर वारै,
रवि-सुत तयाँ अमरपुर राज ।
निधि-हातार कलाउत नरपुर,
अनंत रौर-भति केहि आज ॥

३

रण-दियण पाताळ न राखै,
कनक-ग्रघण रूघौ कविलास ।
महि-पुड़ि गज-दातार ज मारै,
विसन, किसै पुड़ि मांडूं घास ॥

४

नाग अमर नर भुवण निरखतां
द्वेफ ठौड़ छै, कहे हरि ।
घर अरि मान्हा सिंघ यातियां,
कुर्खि, ठठै जाइ पाख करि ॥

गीत ६१

राठौड़ मद्दापजा रायसिंघ कल्याणमलौत रौ

आढी दुरसौ कहै

१ ।

बढौ खूर सु-दतार रायसिंघ विसरामियो,
विढे कुण कंवारी घड़ा घरसी ।
कुंजरां तणी मौताद करसी कवण,
कवण कोड़ां तणी मौज करसी ॥

२

कळह-गुर दान-गुर हालियो कळाउत,
खाख ऊपर कवण याग लेसी ।
अम्हां गज मौज मौताद कुण आपसी,
दान सौ खाख कुण रीम धेसी ॥

३

जैतहर आमरण सतर-घड़ जीपणा,
घरै कुण घड़ा दिवराय घाजा ।
दान फौज्रां तणा कवण गदखा दियै,
रतन रौ मोल कुण दियै, राजा ॥

४

हीदियां छात दोय घात लै हालियो,
घाल ब्यौ आंक जग दुहं याने ।
हसत हय हीडता देखसौ राय-घर,
कोड़ियां खजाना घुपी काने ॥

गीत ६२

राठौड़ भमरा कल्याणमखौत रौ

१

सहर लुटती सरय, नित देस करती सरद,
 कहर नर प्रगट कीधी कमाई ।
 उज्यागर भाल खग फरयाहर आभरण,
 अमर, अकबर तणी फौज प्रायी ॥

२

धीकहर साहि धर मार करती वसु,
 अभंग धरि ब्रंद तो सीस आया ।
 धाग गयणाग खग तोळ भुज लंकाळा,
 जाग हो जाग, कलियाण-जाया ॥

३

गोळ भर सवल नर प्रगट धर-गाहणा,
 अरबलां भावियौ लाग असमाण ।
 निवारौ नीद कमधज आवै निडर नर,
 प्रगट हव जैतहर दाखवौ पाण ॥

४

जुड़े जम-राण धमसाण माती जठै,
 साज तुरकाण भइ धीज समरौ ।
 आप री जिक्का थह न दी भइ अवर नै,
 आप री जिक्के थह रह्यौ अमरौ ॥

गीत ६३

महाराणा प्रतापसिंघ उदैसिंघौत रौ

१

बिजड़-ताप तो नमौ, परताप सांगण बिया,
जगत या अकथ कथ घात जाणी ।
कहर राणा तणी वार मभ अकठा
प्रसण राखै नको हंस पाणी ॥

२

उदयवत, आज दुनियाण सह ऊपरा
सार रौ ताप लागौ सयांडी ।
हंस राखै जिकां नीर अळगौ हुवै,
नीर राखै जिकां हंस नांदी ॥

३

करां खग भाल दुहुं राह मातौ फळह
दूठ लागीं खळां श्रेण दावै ।
जीव री भास तौ प्रसण नह गहै जळ,
जळ गहै प्रसण तौ जीव जावै ॥

४

दई ओ दई गत कुंमकन दूसरा,
घाह-गुर आप रै पंथ चालै ।
राण दइवाण परिहंस लागौ रिमां,
हंस जळ जूजुवै पंथ दालै ॥

गीत ६४

महाराणा प्रतापसिंघ उदैविधौत रौ

आबौ दुरसौ रुदै

१

आयाँ दल सबल सामहौ आवै

रंगियै 'सत्र खच-घाट रतौ ।

भौ नरनाह नमौ नह आवै .

पतसाहय्य दरगाह पतौ ॥

२

दाटक अनद दंड नह दीघौ,

दोयण-घड़ सिर दाब दियो ।

मेळ न कियो जाह बिच महलां,

केळपुरे खग-मेळ कियो ॥

३

कलमां बांग न सुणियै कानां,

सुणियै घेद-पुराण सुमै ।

अहड़ौ सुर मसीत न भरचै,

भरचै घेचल गाय उमै ॥

४

असपति इंद्र अघनि आहड़ियां

घारा भड़ियां सहै घका ।

घण पड़ियां सांकड़ियां घड़िय

ना धीहड़ियां पढी नका ॥

५

आखी अणी रहै उदायत,

साखी आखम कलम, सुखौ ।

राणै अकबर वार राखियो

पातल हिंदू घरम-पणौ ॥

गीत १२

महायुगा प्रतापसिप उदैसिचोत री

१

बरियाम विहंग न खडै वेसामी,
 जग सावज रन पैसै खाप ।
 अकबर साह न छाडै भारंभ,
 पाया न छाडै राया प्रताप ॥

२

वे मत खोकि नरींद बराबर,
 पेखे पद्म हय खहे परे ।
 मेखे जोगणपुरी महादळ,
 केळपुरी ऊखेळ करे ॥

३

प्रमथौ किरण पेखि कीळापति,
 पेखे मीढया तणी दुह दाव ।
 नंद-हमाऊं रीस न नामे,
 सीस न नामे सिध सुजाव ॥

४

सूरज-चांद ताम स मा सै,
 जरे घाव वाजियो खरी ।
 हेकां सिर खीटे वाबरहर,
 हेकां अमट संग्रामहरी ॥

गीत ६६

महाराणा प्रतापसिंह उदैसिपोठ रौ

राठौं प्रियीराज कदै

१

ऊगां दिन समै करै आखादा
 घौरंग भुवण हसत भणचूक ।
 रघदां उणा रक्त सू, राणा,
 रंगियौ रहै तुहाळौ रुक ॥

२

मोकळहरा, महा जुघ मचतै
 धचतां सिर-नत्रीठ घहै ।
 पातख, तूफ तणा पड़ियाळग
 बधिर-चरचियौ सदा रहै ॥

३

खिठ कारणौ करे नित अळवठ
 खेटै कटक तणा खुरसाण ।
 प्रसणां सोण अहोनिश, पातख,
 अग साबरत रहे, खूमाण ॥

४

ऊगां सुर समौ, ऊदावठ,
 घदे वसू छळ घोळ विरोळ
 बल्लभळ ; भरी तणा, चीतौड़ा,
 चंद्रमहास रहै नित घोळ ॥

२३ ।

गीत १७

महाराणा प्रतापसिंह उदैसिपौत रै

१

खळकट सुं खळां सावरत खांडौ,
खांडौ कधे न राखै खाप ।
खांडा बलि राखै खूमाणी,
प्रियमी खांडा तणी, प्रतंय ॥

२

रघदां रुक अचूक रातवे,
पळ नह रुक विळोडे पाण ।
रुके कुंभ-कळोधर राखै,
रेण रुक तणी तिम, राण ॥

३

सत्रहर सार अपार सुरंगे
जूटि सार-घर राखण जौद ।
सारि मारि राखै दस-सहसौ,
सार तणी अयनी, सीसौद ॥

४

असुरां शोळ चोळ धन आयध,
आयध गहि आतम अरिया ।
आयध धम धरती, ऊदावत,
आयध धारे ऊघरिया ।

गीत १८

महाराणा प्रतापसिंह उदसिधौत रौ

आधियो पीयो कहै

१

खटके खत्रवेघ सदा खेहदती,
दिन प्रत दाखवती खत्र दाव ।
अकबर साह तयो ऊदावत
रहै ! हियै, चरणां अन राव ॥

२

नह पळटै, खरदके अहो-तिस,
घड़ दुरवेस घड़ै घण घाव ।
सांगाहरौ तयो आलम साहि
पात रहै, महपत अन पांव ॥

३

घर-बाहक प्रताप अहंग-घर
सु ज वीसरै न पाखर सेर ।
अकबर-उर में साख अहाड़ौ,
घोयणे सेवग भूप अनेर ॥

४

राव हीदवां तयो रवद-रिप
रायो भापाणी कुळ-रीत ।
पड़िया रहै अवर अप पांवां,
अदियौ कुंन-कळोघर चीत ॥

गीत ६३

महाराणा प्रतापसिंघ उदैधिघोत री

बोगछौ गोरधन कहै

१

गयंद मान रे मुहर ऊमौ हुतौ बुरद गत,
 सिबदह पोसां तणा जूथ सायै ।
 तद वही रूक भणचूक पातल तणी
 मुगल बहलोल खां सणै मायै ॥

२

तणै मम ऊद असवार चेटक तणै
 घणै मगरूर बहवार घटकी ।
 भाच रे जोर मिरजा तणै आछटी,
 भाच रे वाचरै चीज भटकी ॥

३

३

सूर तन रीफतां, मीजतां सैब-गुर,
 पहां अन दीजतां कदम पाछै ।
 दांठ चढतां जवन सीस पछटी बुजद,
 तांत सावण ज्युही गयी आछै ॥

४

धीर अषसाण केवाण उजयक घहे,
 राण हयचाह बुय राह रटियौ ।
 कट भिलम सीस, घगतर धरंग अग कट,
 कटे वासर, सुरंग तुरंग कटियौ ॥

गीत ७०

महापुत्रा प्रतापसिप उदेसिचौत रौ

१

अधकी जघ नकुं, नकुं तिख ओछी,
मयातां सुकवि करीजे माप ।
रू ताहरा, राग तोडरमळ,
परियां सारीजां, परताप ॥

२

अधकी केम कहां, उदावत,
रावां तिलक हींदचां राग ।
तैं सिर नमियां नह सुरताणां,
सांगै धंध किया सुरताण ॥

३

ओछी केम कहां, आहाडा,
अकवर कहर तया तप ईज ।
अकवर सरिस रणां अणनमियां
सुरताणां घांधियां सरीज ॥

४

कुळ ऊजोत प्रताप कहंतां
पोढिम घणी घणा मद पाय ।
कुळ नह मणा, मणा नह तो काइ,
मयां न सुकवि घसाणां मय ॥

प्रियीराजजी रौ पत्र

पातल जौ पतिसाहि बोलै मुख हूँठां वरण ।
 मिहर पक्षिम दिसि माहि ऊगै कासिपराव उत ॥ १ ॥
 पटकूं मूँछां पाण, कै पटकूं निज तन करद ।
 वीजं खिन्न, वीवाण, इण दो मंदली बात इक ॥ २ ॥

प्रताप रौ उत्तर

तुरक कदासी मुख पत इण---तन सं इकलंग ।
 ऊगै जवांही ऊगरी प्राची बीच पतंग ॥ १ ॥
 खसी हूँत, पीयल कमध, पटकी मूँछां पाण ।
 पछट्य है जेतै पतौ कलमां 'तिर कैवाण ॥ २ ॥
 साग मूड छहसी सको, समजस जहर सवाद ।
 मइ पीयल, जीतौ मलां वैय तुरक सं वाद ॥ ३ ॥

आठा दुरसा रा दूहा

अकबर समद अवाह तिहं इना हिंदू तुरक ।
 मेवादी तिय मांह पोदण फूल प्रतापसी ॥ १ ॥
 डिग अकबर दळ दाण अग अग भगड़े आयड़े ।
 मग मग पाडे भाण पग पग राण प्रतापसी ॥ २ ॥
 घिर जप हिन्दुस्थान सातर रया मग लोम कगि ।
 माता भूमी मान पूजे राण प्रतापसी ॥ ३ ॥

कवित्त

आठौ दुरसौ वहे

अच लोगौ अणराग, पाग लोगौ अण-नामी ।
 गौ आठा गवदाय, जिकौ बहतौ धुर वामी ॥
 नव-रोजे नह गयी, न गौ आतघां नवशली ।
 न गौ करोखां हेठ, जेय दुनियाण दहन्ती ॥
 गहलौत राण जीती गयी, दणण मद रसया बही ।
 नीसाण मूँछि भरिया नयण, तो अउ आहि, प्रतापसी ॥

गीत ७१

राठौड़ राव चंद्रसेण मातदेवीत री

१

असंख सेन जाई सद्ध प्रासिया अकठा,
साथ विरळा सुहृद धीत सुधै ।
चंद्र गढ सादता निर्मा अहंकार चित्त,
राजता निर्मा नेटाह रुधै ॥

२

काबिली घाट भुंय प्रासिया कइखिया,
कितौ कूड़ौ कटक जगत कहियौ ।
भली तिया जोधपुर त्यार अहियौ भुजे,
राव भली पूठ ज्ये अनइ रहियौ ॥

३

सेन सुरताण रा साथ सहवर सयळ,
सुमट विमना सुनह धीतवी सांक ।
मरण तिया दुरंग साणहियौ माळउत,
घळे पइ गादतै दाळियौ घांक ॥

४

मरम तैं माळियौ मेटि पंडर मतौ,
महर तैं राखियौ तक्षत कुळ मीइ ।
घन आंगी गमण गंग कुळ ऊधरण
रोस फस सकस घन राव राठौड़ ॥

गीत ७२

कछवाहा महाराजा मानसिंघ भगवंतदासीत री

गोपाल चरणावत कहै

१

निहंसि जोघ राजपति कळह कोइ मांडे नहीं,
तेग ग्रहि नको मुहि रहै ताई ।
मान सँ अनि पहां किसौ मांटीपण्यौ,
काल आगे नहीं खाख भाई ॥

२

कळहि अंजस नको अवर हींदू करै,
आयि अग तुरक नह को उपाई ।
कोपिया मान सँ जोर खाले किसौ,
पहुतां अंत विण्य अता पाई ।

३

सुर असुर अखियात घात भे सांमळी,
लीण दै दीण दोह पाय आगा ।
कहर भगवंत-सुत सारिसौ कथण जु,
ऊबरे कवण जमराथ आगा ॥

गीत ७१

कछवाहा महाराजा मानसिप भगवंतदासौत री

भीषण गोपाळ कहै

१

पिढ़ि साभि पठाण, परसि पुरिसोतम,
 पौरिस भगति बघारि अपार ॥
 मान निर्वीत कियो अकबर मन,
 कियो कितारथ हींदू कार ॥

२

सत्र सामे पतिसाइ संतोखे,
 सु पहु भेटि असरण-सरण ।
 बंस खटतीस तणा कछवाहे
 भेटिया दुख जामण-भरण ॥

३

अरि सामे हरि-पांवां आवे,
 जोधे विद्या अकबर छळ जाणि ।
 बिहुं खीतीस कुळां क्रम-बंधण
 मागां माणहरै कुळ-भाण ॥

४

भगवंत-सुतन दुष्ठां त्रिहुं भुषणां
 घण दीहां खगि नाम घणौ ।
 अहमा विसन महेस घदीती
 तप दंगिम जस वृक्ष तणां

।

गीत ७४

भाटी राणल भीम हरराजौठ रो

भोजग सोहित कहे

१

किता कोट सैखोट चड चोट अकपर किया,
छात्रपति गया सहि देस छुंढे ।
भीम तसलीम करि दंड न दिया भरे,
महल वर दा रह्यौ मैवाल मंडे ॥

२

आप री वेद सुं वीत पिण आपियो,
सबल पण ठाकुरे बोख सहियो ।
हुकम सुं गरथ न दिये हरीराज रौ,
प्रास तोगौ अरै द्वारि प्रहियो ॥

३

मिद्वे, भाजै नहीं, देस पिण भोगवे,
परघते गिरे नहीं छाडि पैठे ।
माखहर माख विण दिये, छत्र मंडिये,
धरावरि प्रोळ करि आप बैठी ॥

४

अवर देसां तया बडबडा ऊमरा,
लुळै हींदू तुरक पाह छागै ।
करज रा भरया किम राय जादव करै,
आफ पिण कियो पतिसाह आगै ॥

५

भीम रै पराक्रम नमौ, सोहिख भणौ,
किखै अकपर सरिस तेग भाली ।
पधंग गज भेट री घात सडु परहरे
घरे पतिसाह रै तीम धाली ॥

गीत'७५

राजौ बरवा रायमलौत रौ

आहौ दुरसौ कहै

१

चहुवाणां पछै चढे, रिणां चाचर .

त्रित जो तू न दियत मन-मोट ।

सबजां तर्णां किछूं सागाहत

करतव, कला, अणुअकी कोट ॥

२

माल सियां तदि राण न मूर्खौ,

मेछां मद्दयि पतौ न मुर्खौ ।

रायमलौत मरणा राजौड़ां

हायि टळे वाखाण हुचौ ॥

३

सातल सोम पछौ समियाणो

कमधै दीघ न कळह करि ।

इयदां निज कुळ तर्णां ओळंभौ,

मालहरै टालियौ मरि ॥

४

आधा चोर तर्णां, खेदेचा,

माधै रहत घणा दिन मोस ।

मुरघर-मंडया, तूम तणे म्रित

वेतौ पुरंग स टालियौ दोस ॥

गीत ७६

राठौड़ कल्ला रायमलौत रौ

बाहट महेश कहै

१

मलण माण असुगण रंड राण वेठीमणा,
 आण ताराण दुनियाण आभाँ ।
 पाइ प्रिसणाण खळ हाण कीधा कमध,
 प्राण कलियाण सुरताण प्राभाँ ॥

२

महा महराल अइसाल अरि मंजणा,
 अत जै ढाल भूपळि आयै ।
 कला करिमाळ करि षाल करि काळ फित
 जोध जम जाल भगाल जायै ॥

३

घाह वे राय दूळ ठाह छाटाडिया,
 काह घाते किया ताह कानै ।
 कला अरिदाह हथवाह सिर केविया
 महा रिम राह पतिसाह मानै ॥

४

माण कुरु-राण केवाण हय मालउत,
 पाइ प्रिसणाण सुर थाण प्राभाँ ।
 प्राण तजिया नहीं दाण पळटीजतै
 सिद्ध अयसाण ससियाण सामी ॥

गीत ७७

पाहू भाटी भीम हुंगरौत रौ

राठौह प्रिपीणज रुदै

१

मर सुता नीद ऊपरें, भीमा,
 रुक पछे लुंबिया रिम ।
 किम संभरी, तरवार प्रही किम,
 किम फादो, चाही सु किम ॥

२

पौदिये जु तै कियो, राव पाहू,
 भारथ हूं अधिकौ भाराय ।
 धामे तयो दाहिणे वल्लियो
 हाथ वैर वाहतै हाथ ।

३

तन डोखियां पळे, हुंगर-तगा,
 सुनै नीद जु तै संभुवै ।
 सारहळी चिहुं ठौङ्ग साचवी
 हेफया जिण घासाण हुवै ॥

गीत ५८

एठौं वैरसख प्रिधीराजौत रौ

भोगवौ ठाकुरसी कहै

१

घिनडावि अनेरा जिहीं वैरसल
 पछै न घसियो तेणि पटै ।
 दीन्ही कमबज बाहि देवदां,
 सिर दीन्ही तिणि बाहि सटै ॥

२

भेका जिहीं कळावे आपौ
 तठै न घसियो घास तिण ।
 समपे सु-कर आणिया साजव,
 रेखग ते समपियो रिण ॥

३

जैत-कळोघर तेड़ि बीजदां
 छिलियै साथ रासियो छळि ।
 कमध न रहियो सहे कायदौ,
 कमळ घढाड़ियो तेण कळि ॥

४

पाळियो घोळ भजौ पीयाउत,
 जुड़े पाळियो आंक जुयो ।
 हाथे प्रिहे आणिया हींदू,
 हाथ पड़तां साथि जुयो ॥

गीत ७२

महात्मा अमरविप प्रतापविभूत ०

१

सांग्या दुसरा, अभनमा उदेसी,
अमरा, अमर अदियौ ।
हे आसीस तने दुसरायौ,
नवरोजै ना अदियौ ॥

२

घरचे चनगा तूफ, घीतीडा,
पुहप-माळ पहरावे ।
वासपयौ न करै दीघाळी
ईद तणै घर आवे ॥

३

पातळ रा कळ जाग पताघत,
अदसी रा कळ आगे ।
इळ जस-रात जनमियौ, अमरा,
जमा-रात नह जागे ॥

४

विशांगद हद सोह चाढवा
सोह हमीर सरीखां ।
खाळादरा, नफू खेखियौ
तिथ मेळे तारीखां ॥

गीत ८०

महाराणा अमरतिघ प्रठापसिधौत रौ

आजी दुरसौ यहै

१

पहिलीइ सयळ स जूफे पौरस,
पर दळ खुटंती परवंत ।
रौद्रां हाथ न आवै राखौ,
भाजर पाखरिया भगवंत ॥

२

भागै भोम पड़ेवा अमरौ
मेराडौ न दये मेवाड़ ।
सेठ संघार चढै फ्यूं समहरि,
प्रम गुर सिखगारिया पहाड़ ॥

३

कुण्य आगमै अभिनमौ कुंभौ,
पात स भोचन विरद पगार ।
फरणा-फरणा चणायी कैजम
ऊगर अनडां भार अदार ॥

गीत ८१

शमराज अमरसिंह प्रतापसिंहीत है

सांडू माली कहे

१

पादाद घटै, घसमान पाकड़े,
 भीठ पूजवे इंद्र मही ।
 तौ खग त्याग घंस खट तीसा
 नागद्रहे जेवड़ा नहीं ॥

२

अनिं अधिपति ऊंचा ऊचेरा
 घर हुंतां गिर चढण धुरै ।
 माया रहै बियां मोढ़-बंधां,
 अमर, तुहाळी कमर उरै ॥

३

सां हिंदवाणा, ताम हिंदू धम,
 तां हिंदुही हिंदुवह दीस ।
 जां जग-जेठ जोध जोगणपुर
 सीसौदियां न नामै तीस ॥

४

मिड़ परबत ठोसियां न भाजै,
 जावौं सिर फोड़े जपन ।
 ऊतर दिगै न दिगै अमरसी,
 मेर ऊपलो नखत मन ॥

५३

अधज हाडा कूरमा महलां मीज करंत ।
कहजौ खानाखान नै, वनचर हुवा फिरंत ॥ १ ॥
चहुवाणां दिखी गयी, राठौडां कनवज्ज ।
अमर पयंपै खान नै, सो दिन दीसै अज्ज ॥ २ ॥
धम रहसे, रहसे धर, किस जासे खुरषाय !
अमर, विसमर ऊपरै राख नहंचौ, राण ॥ ३ ॥

गीत ८२

एठौइ महाराजा दळपतसिंह एवसिपौत रौ

१

परम-रूप पतिस्ताह, संसार पंकज पगे,
 मंडियै छात तिर ताइयां मौइ ।
 दळघई नाटसल रिदै ऊपर दियै
 राति-दिन भगुलता जेम राठौइ ॥

२

जोवतां यिया मंडळीक धारिज जिहीं
 जुगल हूं राखियो नको जुघौ ।
 जैतसी अभिनमौ खूंद जगनाथ चै
 द्वियै भगुलता ची भांति ह्वौ ॥

३

महि मंडल परम पै ओपिया मंडळी
 ओळगू अंतरे जिमी असमाया ।
 रिख तया ओया पाहार जेदी रिदै
 जयर जगदीस चै दली जम-राया ॥

४

तुरक हींदू बिन्दे कमध पायां तळै,
 तेग बळदीया नव खंड ताई ।
 हुधौ मुनि-ईंद्र लंकण जिहीं करयाहर
 महमदया तिमरहर उघर मांही ॥

गीत ८३

चांपावत हाथीविष गोपाब्दासौत रीं

सांढाइच आसो कहै

१

अवसाण घडे अखियात उजारी
 विरद पगार भंते थाय ।
 दळपति चाडि विहंडतां दुइणां
 हाथी मजा चाहिया हाथ ॥

२

वामण दसण सुंड करि दाणवि
 नर नरवर नामतो निराट ।
 मांडणदरौ हुवौ रण-मांडण
 हाथी हेइवतां हय-थाट ॥

३

घदती विरद मझरि मद्र घदती
 घाग घड़ा घरियाम विभाडि ।
 माल तणा सुंडाळ तणी परि
 अर भू परि नाखिया उपाडि ॥

४

आपौ सांढि रदग ऊपरणियै
 जण-जण वाहे जुवौ-जुवौ ।
 मारे मार महारिण मंहि
 हाथी हाथी फटक दुयी ॥

५

पीकाहरौ सामळे विचनौ
 हाथी हियै न घैठी हारि ।
 रिण-रीचल रहियो रिण रोहे,
 मांको भुयो मांभिया मारि ॥

गीत ८४

सोनिगरा बसवंत सिधौत रौ
धामोर ठाकुरसी जगनापीठ धई

१

छुग पार पखै गा मुझ जोवंतां,
राजि कन्है रहती दिन-राति ।
आज स हार विचै ओपावै,
जूना देव, नवी आ जाति ॥

२

आइवि-आइवि जु तें आणिया,
सु जि जाणै मै दीठ सहि ।
कमळा तणौ कमळ तो, कंता,
किम जुड़ियाँ, थे वात कहि ॥

३

महि रामायण सीस लिया मैं,
आखै ईस सकति सु धेम ।
जाइ आणिया ताइ वू जाणै,
कोइ न आणियाँ, जाणै केम ॥

४

उतधंग इसा धगै ही आणत,
नाथ कहै सांभळि निय नारि ।
वेचणहार न मिलियाँ दूजाँ
सिध-समोधम जिसौ संतारि ॥

५

आप तणौ श्री तणौ आप री
भिड़ि भटनेर पडंतै भार ॥
सिर बेधे जसियै सोनिगरै
दीन्दा मुझ धडे दातार ॥

गीत ८१

सोनिगरा जसवंत सिधौत रौ

।

१

धरधंग कंठ सीस जैसे औपावे
 भिल्लां गढ विच सार भर ।
 हर-धरधंग तिण देखि थरहरी,
 हर इया पड़सी रखे हर ॥

२ ^

वनिता-कमळ बांधि गळ विढतै
 हीळोळियाँ जु धीरहरे ।
 डरी तेण पारवती देखे,
 रखे पमाळी अेम करे ॥

३

सीस धरणि चौ गळै माळ सभि
 सिंध तणाँ विढियाँ स जगीस ।
 संकर-धरणि देखि तिण संकी,
 संकर लिये रदे मो सीस ॥

४

सती सोनिगरी मुग्रा धडे सत,
 तीयाँ तणाँ म्हे लिया तिणि ।
 धापर-कमळ न हां, दद्र फदियाँ,
 रही दरपती दद्र-धरणि ॥

गीत ८६

राजौड़ किष्णसिंघ रावसिंघौत री

छालछ हपसी कहै

१

कंधरां गुर धेम पर्यै केसय
घळ दाखवती सहसयळ ।
रोर न मारं जि के रीभियां,
खिभियां किम मारिसै खळ ॥

२

ऊच-घहौ राइसिंघ-अंगोअम
आवे राजकुमार इम ।
तुठा हाळिद-अडा न तौड़े,
रुठा किम ओड़िसै रिम ॥

३

धे-धिघ प्रतिघ अग्निनमी धीकौ
छावीं आयि जस घंत खळ ।
रोर गमै उद घाळि रीभियां,
खिभियां गमै अकाळ खळ ॥

गीत ८७

बलवाहा बरषल खगातैव रै

१

ति मेयाणे कलै कियी जिम साकौ,
जुड़ि चीत्रइ मुष्ठी जैमाल ।
कूरम, तिसी नगाण कियी
तिरे मरण तै, बरीसाळ ॥

२

रायमल्लोन अणपल्ले बहियो,
धीरम री धीभ्रांइ विचारि ।
विठियो घघे नवलगढ धरी
तिणि संहार घदै तरवारि ॥

३

कमधज जिम गढ तकै न कूरम,
विठि भवान रहावी घात ।
पांच हजार भ्रांज नै पड़ियो,
धा धरइ तयी अखियात ।

गीत ८८

ध्वजाहा वैरसल खंगरीत री

१

मुड़े किम आविये परय वैरदो मुणिस-गुर,
 भिके जिग यडा गज-भार भागा ।
 सामुहो भाग धधि करां जू सांफळी,
 ओहये, काळ, मति मूक भागा ॥

२

सायळां ऊजळां बीजळां सांफळीं
 धीय दे अरिहरां तीस धायी ।
 मुड़े तूं धाज ती धाज हूं फ्युं मुडूं,
 धाय, जम राण, अयसाण धायी ॥

३

सारळां तणी दे भीक धाखाड-सिध
 दुरित तै मेठदळ भांजि दीयी ।
 यप तणी टाळ कीधी नहीं धरके,
 काळ री घाळ प्रहि जूक कीयी ॥

गीत ८६

षड्वहा वैरखल खगरीत री

१

यावीहा मोर फोकिजा घोले,
नित बरधा खळके नदि नाळ ।
करधी मुहिम न कीजे, कूरम,
बळि, वैरा, आयी बरसाळ ॥

२

खिण्डे वीज चिहु दिस, खागाउत,
मोर मल्हार फरै महिराय ।
पावस रित आयी, पाधारो,
दीह घणा लाया, दीवाण ॥

३

दुष्ट आपणा न दीजे वाया,
खट वन भूरै मनव खरा ।
बळ सावण आयी, वैरागर,
दित सागर जेमाल हरा ॥

दूहा

विडण तणे दिन वैरइ कयन इसा कहियाह ।
पर-प्यात नावो घरे, रख-प्यात रहियाह ॥ १ ॥

गीत ६०

बछवाहा केसरीसिंघ बैरसत्तौत री

१

अमंग बडौ ऊदार संसार सिर ओपियो,
 भुजे कूंतब तणा कालिया भार ।
 जाम री घरा परदेस कांइ जाइजै,
 देस में केसरीसिंघ दातार ॥

२

जूणसी चंद मिथिराज कूंतल जिहीं
 जेम जगमाल रांगार जैसौ ।
 लाम नूं मांगिषा काहू पांइ जाइजै,
 कली बंगसी दिर्य गुटे केसौ ॥

३

फलू...दिसि नै घणी छाबच करै,
 कहै केहरि तके सु-पद फूड़ा ।
 पडा परियां जिहीं भाज बैरा तर्णी
 राज रत्नपाळ दिचै घाज रुड़ा ॥

गीत ६१

पणा कारणविह भ्रमरसिपोत री

सौदो कल्याणदास कहे

५

त्रिजडा ह्य समरय करण, ताहरो
सबळी दख विहं विधि साहि ।
अण मिलियो साले उर अंतर,
मिलियो उअर न मावे माहि ॥

२

असपत-राय मणे, अमराघन,
परिहंस शयडी विहू परि ।
ना भायो खटके नागद्रही,
भायो नह मावे उअरि ॥

३

पोदा नखन पेखि, कैळपुरा,
जळियो खूद विहू परि जाइ ।
अळगे रिदो छेदियो आतम,
सक भायो नह रिदै समाइ ॥

४

मिळते अणमिलते, मेघाडा,
जुग सह जाणे जुअो-जुअो ।
सेखू हिय सबळ सीलीदो
हे-वे विहं विधि साल हुअो ॥

गीत ६२

राणा अगतसिप करणसिपौत री

१

आखे हम जगौ राणा अनिबारां
 कैलपुरी जाणियां कळ ।
 तिम-तिम भेळौ कियो सभं व तें,
 जिम-जिम खारी थिये जळ ।

२

दाखे करण-तण्णी देसौतां,
 घाय जगपति ऊधोर चित्त ।
 कइयो हुवै हेकठीं फीयां,
 मभियां मीठी थिये वित ॥

३

आखे जग-भाणिक आदावी,
 देसौतां, ऊपरै दियो ।
 जळनिध घण्णी सांचियो जग तोइ
 थयो अताथ अवेय थियो ॥

४

नर नर वे, सायर दिलि निरखौ,
 हुवै सांचियो हळाहळ ।
 जौ अंधर वरसं तो, जोषी,
 जग पाल नै अचित्त जळ ॥

गीत ६३

धीसै दिया दळपत सगतावत री

१

मेवाढ़ तणा में दीठा मंगि,
प्रगटे न दीठौ फहं पाया ।
दळपत उरै सकोई दाता,
दळपत परै हेक दीवाण ॥

२

पावो पटा घणा बर छाटी,
दग्घागं मद वही दुगाह ।
सगताणी पाछळि सह कोई,
सगताणी भागळि जग साह ॥

३

ऊदाहरै उदैपुर धायै,
तडतर किया सु दनि भदभूत ।
इससहसै दाता दोह दीठा,
राणी हेक, हेक रजपूत ॥

गीत २४

रठौड़ उप अमासिप गजसिपीत री

गाइण केसीदास बहै

१

गढपतिभे घणा किया गढ रोहा,
परगहँ छ ज़ुभिया पद ।
मिम कीधौ अमरेस जडाळी,
कियाहि न कीधौ इम फळंद ॥

२

फोटां घोट घणा जुध कीया,
फौजां घणा किया फर केर ।
राउ राठौड़ जिहीं सुं राँद्रां
प्रधपत विदियाँ नको अनेर ॥

३

फोटां प्राण प्राण कै कटकां,
सुं पहरिया दिली पतिसाह ।
अक कटाति कियोँ न अेषण,
गजसिघौत जिसौ गजगाह ॥

४

दाणर वि त्रिण पगां तळ दीना,
घणिये मगण दिपाळियोँ घाढ ।
घाही अेषण गग-वसोधर,
जमदाढां मांही जमगाह ॥

गीत २७

राटोइ राव अणसिप गजसिपीत रो
गाह्य केओदास कट्टे

१

अतुळो बळ अमर न सहियो ओकर,
माहि आसम आगळे सनाट ।
मुगळ फ बोळ घोलियो मोडो,
जडियो ते वेगो जम-दाड ॥

२

गजसिपीत कमंधून (गाढिम
ततखिण माचवियो रिणतान ।
कु-वयण घरण काढिग्रे दुआस्तु
प्रिसण परा काढी प्रतमाळ ॥

३

फानां लगे हेरु गौ कु-वयण,
कमंध भलां वांधतो कडि ।
पूचा लगे भुजा डंड पेली
धाराळो अरि तणे घडि ॥

४

असपत राव सनमुत्र अणियाळो,
अमर, जु ते वाही अवसाण ।
कु-वयण कमळ वाय हंस वेधी
अ काग नीसरिया आराण ॥

५

सुरत छोद निर्मो नव-सहसा,
सभियो बोल न यत्री गुर ।
मरण तणे प्रश्न भला मगिया
अक कशी घडु असुर ॥

गीत ६६

राठौड़ राव अमरसिंघ गजसिंघौठ रौ

आठौ कियनो कहे

१

घडे, ठौड़ राठौड़ अखियात राखी बडो,
 जोरघर जोध जमदाड जम रा।
 सखावत दिलीपन देखतां साभियो,
 अयो तिण चार रा रूप, अमरा ॥

२

गजन रा केहती सिंघ जूफार-गुर,
 मयु तजि जगत्र सहु हुकम मानै।
 पाडिया तै ज पतिसाह री पाखती,
 खान सुरताण दीवाण खनै ॥

३

हाकती दिली दरियाव हीलोलतौ
 ठूकड़े साह अमराव ढहे।
 आगरे सहर हटनाळ पाड़ी अमर
 माठमा रावि दरवार मांहे ॥

४

पगे पहरै जठे हाथ सुं परहरै,
 लोह सभि नरो असमान सांगै।
 तो जिसें जूभियो नरो हिंदू तुगक,
 अमर, अक्षपर तया तपत भांगै ॥

गीत ६७

राठौड़ राव अमरसिंघ गजसिंघीत रो

गाडत माधोरास वहे

१

प्रथम मारियो सनाथतदान, किनाई पछे,
मांकड़े सूर रूधे संगाही ।
अमरसी तन्त्रत पतसाह मुद्द आगळी
धीर रस गाढ जमदाढ बाही ॥

२

छात्र साह रा गाजी तयो छावडे,
जपे जण-जण घयण जुआ-जूआ ।
ऊपरो असुर-दळ कटारी उभारी,
हजारी हजारी गरद हूआ ॥

३

ऊठ गौ खूद जड़ ताक ग्रहि अतरै,
दाख आतस अजर सेन वढ़िया ।
सुरहर आभरण तणी प्रतमाळ सुं
प्रघट उळट पाळट मेळ पढ़िया ॥

४

केसरी सिंघ राव मालदे कळोधर,
चाह्या गुर सदा लग घडी चेली ।
धीचघ साह आलमी जालमी धीजुळ,
मरण मिलिये कियो ताळ मेळी ॥

गीत ६८

एटोइ राव धनरसिप गजसिघोत रो

१

सुरलाण ह्यौ भैभीत संपेखे,
 गुड़िया यान, सु पड़ियो गाढ ।
 अमर तथा भुज हुंतां अंधर
 जायौ घजर पड़ी जम-दाढ ॥

२

वाही गजसिघोत विसरिछै,-
 असुरां फूटा अफर अशी ।
 मुगलां तयो पड़ी किं माथै
 भिजड़ी तड़ित अकाळ तयो ॥

३

हुय हिकंप कांपियो हजरत,
 लागुश्रां परै नीलगी छाग ।
 ब्रह्मंड अमर भुजा डंड वहती
 वाढाळो जळ्दळो अजाग ॥

४

असपति राव चमकि ओद्रकियो,
 खेड्दचै वाही करि खीज ।
 सुफरि अकास हुंत सेजारां
 - वीजुळ विदण क वूही धीज ॥

५

जवनां सु अमरेस जूटवा
 कटारी दामिण करण ।
 खानां घणां तयो खण खानौ
 ओण रंगी अक्की सारंग ॥

शंख ६६

राठोड़ राव अमरसिंघ गजसिंघोत रौ

१

अमर आगरे अखियात उबारी
 भड़ जीपण द्रद भरी।
 पच-हजारी खान पाड़ियो
 समधज तथा कटारी ॥

२

भूरे रे अगनेणी भूवर
 मेह तथा परि मोरां।
 जोगण पीठ दियां सहजादी
 घूमरि ऊपर घोरां ॥

३

दस-दस पास खवासी दासी,
 अपरु-वरण ओदियां चीर।
 सस वदनी नाखे सिसकारा,
 भीरा, फदां माहरा मोर ॥

४

पास अळंक गोखड़े ऊमी
 ढोयां काजळ पीवी।
 गळती रात पुकारै गोरी
 चाबहिया जिम पीवी ॥

गीत १००

राटीइ थळू गोशळदाखैत चांगदत री

१

अमरराव चाळे दिवसि हाय जाणे अनंग
 चूरवर साधि लीधां समेळा ।
 पटै जी हुतौ थळू पतिसाह रै,
 थळू भेळौ हुयो मरण घेळा ॥

२

तण गजण साधि भाराथ चित तेघडे,
 त्यार भइ मुहरि आगळि रात्री ताइ ।
 असुर री विन जायती खत्री अनरै,
 अंतरै तत सु ज मेलियो आइ ॥

३

जोधपुर सुपह री चाड मांडे जुइण
 आप रा लिया परिगह उजासै ।
 पळ री खूद धरतणि जुदी पामती
 पूजियो विघन ची वार पासे ॥

४

मारियो सुणे पतिसह राव अमरती,
 साह सू मनि जुध भवा सारु ।
 मरण दिनि पटौ परहरि नयो मौड यधि
 मुष्ठी जूना पटा साधि मारु ॥

गीत १०१

राठोड़ बळू गोपाळदासीत्र चानवड रौ

१

विजड़ ऊठियौ धूरा गिर मेर सो घहादर,
 पळ रहे कदे अघसाण पावां ।
 अमर नै सुरग दिस मेल नै अरुलौ
 आगरै लड़ेवा कदे आवां ॥

२

अम्हे तो अमर राजा तणा ऊमरा,
 जुड़ेवा पारकी थटी जागां ।
 घोलिया बळू पतसाह रे परापर,
 मारवै राव रौ घेर मांगां ॥

३

केसरवा मांह गरवार घागा फरे,
 सेहरी याध हडकार साथे ।
 अमर रौ भतीजौ तोल सग आपत्र
 पळ अर आगरी हुवा साथे ॥

४

पटा नै नापि मिढ़ साह सें घटागड़,
 काम मयशोट साथी कनायो ।
 पाद कर साह सें घेर प्रग घोडिगौ,
 अमर नै मुहर परिसरग कायो ॥

गीत १०२

राठोइ पळू गोपाळदासीत चांपावत पै

१

भिड़ भिड़ ऋगडै कोइ धीर पडै भुष
परमेसुर सुं बाधि पलो ।
हरणी हाथ आग रा भांहे,
पंस छतीसां कहे चळीं ॥

२

चक्रपतियां धाखे चांपावत
मंडियां मरख तणी नीमंत ।
भाजाइयां हाथ भगवन रै,
भाजाइो मौ ने भगवंत ॥

३

गोपाळीत घडै गढपतियां,
सुरां छा ही वात सही ।
नारायण हाथे नीसरणी,
नारायण नीसरै नहीं ॥

४

कियां अइप ठडो कगता सुं,
मागीपणा तणी सिर मीड़ ।
रया गाढी ठाडी रजपुती
टाम ठान खाडी राठोइ ॥

गीत १०३

राठीक बरू गोपलदासीत चापावत रौ

१

फहर फाल लंकाल बलिराय गज केसरी,
जोध जोधां सरिन भ्रम जूटी ।
सांरुळां हुंत नाहर किनां विछूटी,
तगसियां किस हू किना भू! ॥

२

दूसरी मयंक दूदवे टळां देखनां,
जोट चट छडाळै पिण्ण जड़ियाँ ।
हसत दीठा समा रीह घाथां हुयीं,
पनग सिर फनां धख-पंख पड़ियाँ ॥

३

पाल रा नमौ हयवाह वहां प्रलय,
तळिछि सुदर लियो दळां अणताय ।
उरड़ पड़ियाँ फना गठड़ अदि ऊरे,
विरड़ वृटी फना गजा सिर थाय ॥

गीत १०४

राठीव गोकुळद स मनोहरदासोत चांपावतरी

परहट रतनसो फहे

१

जुग धीता अतंत आंवते जाते,
 लागी किसी हमरके लाइ ।
 आधी मेव्हिह आध चप आयी,
 खान तगा हंस, कहे खुदाइ ॥

२

मान तणे सुखि श्रमर तगाँ छित,
 खग आछटियाँ खार खध ।
 चप साय आधी अधि बढने,
 आधी ही ज ऊडियाँ अध ॥

३

चंचिये दम वाह्यो खेडेंचे,
 में पिण दम खंचियाँ मदि ।
 सुधि न रही आपो संभावणा,
 घडियाँ तिम चालियाँ घदि ॥

४

मीरां फहे, चाय खे न मानां,
 भांति इसी गह कदे भयो ।
 पाता पात करंने वांसे
 रतरे बीजोइ आध अयो ॥

५

मळो मळो गोकुळ मुखि आये
 वीरां पैठपरं पटि ।
 मीरां हंस राखिया मीरां
 केठ-राह सारिखा फटि ॥

श्लोक १०४

गोह आश्रय वीटलदासौत ऐ

१

इह मुहांमुहि हुकम विद्धुटा,
खूटा पड़ियाळां खंजर ।
गजा सांकळां तूटा
जूटा अरजण अने अमर ॥

२

अंघखास विचै छकिया ऊछकिया,
धुखिया लोटै मीर धर ।
राजा तणा रहै किम रुकिया,
भुकिया बिन्हे पटाभर ॥

३

चकवै तणा चालिया चाळा,
टाळो करे घणा टळिया ।
दोय दरगाह विचै दांताळा
मतवाळा घाये मिळिया ॥

४

घोटलदास तणौ मद वहनौ
आग लखहती आंकड़ियौ ।
अरि घहियां रहियौ अजमेरौ,
पटहय जोघपुरौ पड़ियौ ॥

गीत १०६

पद्मवादा महागजा जैसिघ महासिधौत ऐ

महिफारियौ पुरौ कद्वै

१

लड़े मुड़ी पतिसाह, विमूहा अड़ी लसकरा,
 रिण पड़ी घणी धारां तणी रीठ ।
 किम किरै पीठ जैसिघ कूरम तणी,
 पिधी चौ भार कूरम तणी पीठ ॥

२

लोप दिंदुवाण पाताळ अणलोपियां
 कोप असुरां सुरां घणी करतां ।
 निज विन्हे मोर केरै नहीं परम अंस,
 फुरै पुड़ घरां चौ मोर किरतां ॥

३

तदि हुवौ मानहर अडिग माहव तणी
 साह मेनाह जदि पड़े सांसे ।
 कहर कहरवाह वांसौ पळट करै किम,
 वसुह ची मांड दिहु भड़ां घांसे ॥

४

अडग दिंदुवाण परसाद तीरथ अनंत
 सह आलम कलम हुधा साखी ।
 कूरमां दिहु रया पूठ अणकेर करि
 रेण ऊथळ-पथळ हुती राखी ॥

राजस्थानी धीर-गीत

गीत १०७

बछवाही किसानावती रौ

बोगसौ गोधन कई

१

भारथ मझि मिले दुमरी भारथ

रथ टांभियो जोवण प्रहराज ।

उमया ईस उभै आहुडिया

किसनावती तथै सिर काज ॥

२

कत सूरति पेखे बछवाही

हुवाँ पदम हथ विमुह हथ ।

आवभियां उतवंग लै आदम,

सकति रूप कहियो सकत ॥

३

अमुज अमुज-चर नारद औसर

त्रिपति पांच मिलि पांच तत ।

हँ सर तिरपति सुज जाण हरि

त्रि सगति त्रिहू रति तिरपत ॥

४

रुद्र-घरणी जंपै, सांभळि रुद्र,

आज खगै तैं लिया अनेक ।

जैसिघ-धूय तणी घू जीतां

अंघर भर मो जुडियो अेक ॥

५

हरि-दरगाह न्याय गा हाले,

प्रह्न घांटियो करे विचार ।

सतरमौ सिणगार सिधा सिघ,

सिर आधे पूरौ सिणगार ॥

गीत १०८

फक्षवाही किसनावती री

बोगसी गोरघन कहै

१

दय दाधी छेफ, श्रेक दुख दाधी,
 किसनावती, कहै सुर कोढ़ि ।
 गंधारी न जुड़ी धारी गनि,
 जुड़ी न कुंता थारी जोढ़ि ॥

२

सूरत धन जैसिघ सार धू,
 भली भली ग्रिहुं भुवण भणी ।
 मा बैरवां तणी न कियो मन,
 सो जेही पांडवां तणी ॥

३

घत प्रय मइ विन्हे तो मिलिया,
 कहिजे ज्यां व खाणु किसा ।
 दुरजोधन जिसड़ा दुसासण,
 जुधिठिल छरिजण भीम जिसा ॥

४

वेहर सूर लियां फरुवाही,
 सुगति तणै पथ चाली मास ।
 जळी नहीं सुनी कुंता ज्यु,
 रूनी निगम गंधारी रात ॥

गीत १०३

चौदाण सद्गुळ समंतसीहोत री

चेतवी लालस फट्टे

१

तर करि फांड खपी, करी कांर तीरथ,
 रात्रियां तीरथ धार राग ।
 देजो, दखिण-दळां विच दीसै,
 सादूळै कहियो, सरग ॥

२

अठसठि तीरथ विखूं आंगमो,
 दोरी पथ, फळ खाम हूरि ।
 देजो रे, चडवाण दिघाळै,
 हरिपुर सत्र घट्ट परे हजूरि ॥

३

सुनदो, विखूं करी मनसंभम,
 साकी गंगा किसी मट ।
 सारां विचै, पतार्य -सादी,
 नेहो अमरापुर निपट ॥

४

साग्ही सारि दगिण घट्ट माग्ही
 निघदि मुहरि चाबियां निगट ।
 सादूळ्यो पैकुठ गो स्यां,
 येपुठ मदीं न भूखी घट ॥

गीत ११०

राठौर महाराजा कालखिप्य सुरसिपौत रौ

बाहट चदरौ फदे

१

रर धुज्जै गज्जै गयशा घज्जै मेरि निहाव ।
 अरी अलंगै थोद्रके चढियाँ सुरसुजाव ॥
 घढियाँ सुरसुजाव नगारं चोट है ।
 किर जुग्गां आदीत विचे दळ घादळे ॥
 हाळ फरके पूठ घहंतां मर-भारां ।
 हाळ चलै फणि सेस हुये पार हैंवरां ॥

२

हेंवर गेंवर दल्लिया लीणखसपकर छोर ।
 गोबळ-कुंडै ऊपरै पदे नगारं ठोर ॥
 पदे नगार ठोर चढै है चक्रवति ।
 तो खं हुइ मुहमेज लड़े कुण क्षत्रवति ॥
 दळ धमण करयोस विधूसण अरि दळां ।
 सयळा चादण घोळ गडां तिर सवळां ॥

३

सयळा गढ गंजण सदा भांजण सयळा भूप ।
 भरपत्ती धीराण रा राज नवै खड रूप ॥
 राज नवै खंड रूप विभाइण राइयां ।
 छै पाळटा फोट लडे खं ताइयां ॥
 महपत्ती कमधरज मखंदां मोइया ।
 त्रिजडां मुदि तुरकाण तगी जइ तोइया ॥

४

भिजड़ां मुहे तोड़े तुरक नीजांड़े नेजाळ ।
 सायर लग धर लंप्रदी भारथ भीम भुजाळ ॥
 भारथ भीम भुजाळ भयंकर इन भडां ।
 सतहर सारि खंधारि उपाइया अन्नदां ॥
 मिइने दोइ पतिसाह तणा दळ भंजिया ।
 ते छळि साहजदान भगंजी गजिया ॥

५

गढां अगंजां गंजणा मिइ भंजणा अमंग ।
 हेमर उरि धर हफकया वेऊं घाट परंग ॥
 वेऊं घाट परंग कमध अथळा यत्ती ।
 मोजां दाख घगिस महीपत मंडळी ॥
 जैनहरा राजान विया मन जंतसी ।
 फमरे ज्युं दहघाट किया दळ कुतपदी ॥

६

भंजे साह कुतपदी गह गंजे तिलंगाण ।
 फन्न फत कर आविशी जंगळवे सुरभाण ॥
 जंगळवे सुरभाण नगारे घाजन ।
 गोचळकुंडी गादि गयंदे गाजने ॥
 मीरजुमलौ आणि समावे सादि नुं ।
 धूदइ दयिपण देख विलगनी राह तुं ॥

७

राह विलगनी अगिदगं प्रहण कारण गज-गाह ।
 देय गिर सरिमा दुरंग येठी गिले दुयाह ॥
 घेठी गिने दुगाह भगंजी छष तिर ।
 राजा आरंग राम कि चीजा इह तिर ॥
 सुरभाणा सुरभाण तिरि राह सुर री ।
 फादि दिपाळपां राज अपिरचळ फन्न री ॥

गीत १११

राठौर रतन महेसदासीत री

महियारी पू यदास कहे

१

पहे कराम लोह ओरे जडे बहादर,
 भेदगर खगल भेम भावे ।
 जतन न करै रतन निंद रा जुड़गे,
 रतन ईजति तया जतन रापे ॥

२

घरा ब्रह्म लियण खाटे भुजां चारिया,
 धरां विरदां लियण अजे घांजे ।
 साह रा ऊंभरां पहल असि साबयै,
 निहसि असि भाव रा पहल नखे ॥

३

महा दातार जूकार माहेस री,
 ठिकरणां ठिकरणां छतौ पाये ।
 भाग री कमाई भोगयै विया भइ,
 आग री कमाई रतन पाये

गीत १११

राठौड़ महापद्म असंबंजसिप मजसिपौठ पै

१

दिली-साह छळि उजेणी याह खग दाप्रते
 लइण ऊखाह अउसाण लाधे ।
 जसत चतरथां गज गाह रचि वूं जुइं,
 विहूं पतिसाह सुं नेत याधे ॥

२

बाहुवा कमंध रचि पदां घोळास्तौ,
 अरीहरि गांजती भुज अकारे ।
 सांकळे तुदिज, गजसाह रा सोंघला,
 साह आलमं दुवै सरिस सारै ॥

३

वेहहतो गजां हि-घाट लागे अटळ,
 रीठ धागां खगां दुवै राहां ।
 जोध जसराज पूगी भली जूजवी
 सेव रोळे दुहं पातिसाहां ॥

४

असाडे कुंन अकतां धरीं चापडे,
 रौद-घड पछाडे अचळ राखी ।
 जीधनां सिंभ महाराज धणियां जसौ,
 समर चा करै रवि-चंद्र सारी ॥

गी३, ११४.

राष्टीर-महाप्राजा अखरवसिथ गजसिपीव री

१

उमै फाविया विरद अनराज खगि ऊजळा,
 भुजां भारय दिली भाट मळियौ ।
 घालियौ आंक आरंग सरिस वाजतै,
 बळेही मुरइतै आंक वळियौ ॥

२.

फीध, तें तिका राव-राण जाणो, कमध,
 रहावण घात सिर दुने राहां ।
 जसा-अखियात अे साहि सू जूटतां,
 सार बळि लूटतां पातिसाहां ॥

३

गजन रा नमौ तो पराक्रम यत्री-गुर,
 समर दुहुं तणा रनि-चंद्र साखी ।
 आगि दाखे अचळ खूद यह खंगरे
 हुंद करि खूद सू अचड दाखी ॥

४

साह कळि सेन-सूटे तखत साह सा,
 घजाडे जोघहर जैत घाजा ।
 कीपिया ऊजळा मयाडा दुवे, दुहु
 राज रा मुज, सुजस, महाराजा ॥

गीत ११५

दाही राणी जसमादे री

१

दिन मांचे दुंद खुंदचे दमगळ
 पतसाही मझ रोल पड़े ।
 दाही चढि फौजां हलकारे,
 लाही जसवंत तणी लड़े ॥

२

ऊगे दीह जमन चढि धावै -
 सुददां भडां लियां यहु साथ ।
 श्रीरंग साह घसे किम आघौ, -
 भागौ ही सुयाज भायथ ॥

३

भाऊ जिसें धरोडा भाई,
 भइ जसवंत जेही भरसार ।
 चिमघा लदण चलावै चोटां,
 सप्रसळ-सु-धी वजावै सार ॥

४

पल्ल दुहुं प्रमळ सासरी पीहर,
 जेठ अमर, सन्नसाल जणी ।
 राणी पाणी धरम राखियो
 सागौ हिंदुस्थान तणी ॥

गीत ११६

भाई प्रतपसिंघ सुरताणौत-री

१

सुरताण तणा, राव राण सराहे,
झत्रपट बायी नहीं यता ।
जैसळ गिरां तणौ जावंतो,
पाणौ तें राखियो, पता ॥

२

सरुसा फटक देखि नयसदसा
बेली तज ग्या छाडि थळ ।
भाइ तणौ जायतो, माझी,
जग भळ तें राखियो जळ ॥

३

भूटां दीनी कोट भाटिये
मरण विदया चो छाडि मतो ।
नवगढ तणौ नीर नीसरने
पाळ हुझीं छत गाळ पती ॥

गीत ११०

महयुगा राजस्त्रिय जगदधिपति री

१

दळ जालै सःळ पाग-भळ दोमस्त्रि,
 राजवट-जळ सोखै खळ रेस ।
 महियळ रूद तयो उर मांहे
 राणी चढ़वानळ राजेस ॥

२

आग-सपत निस वीह अखूटिन
 रिम अंग पति न साकि रडे ।
 जळनिधि साद विचालि जगाडत
 चड पडु भाळ कराल वडे ॥

३

घटति पडे नह, पूर चढै घण,
 पौरिस तेज जळै पूडाण ।
 सागर अमुर तरण चग साधे
 खत्री अकळ मगळ रूमाण ॥

४

किलब तोड नह धये पराक्रम,
 समरि लहरि नन धिये सुख ।
 चडु वळ रौद सभंद रिच चाभे
 राण अभावी दहण रुख ॥

५

जळित नीर खग भीर प्रजाळै,
अणभंग वीर स घोरज भेम ।
शौरंग-वारि मभारि धिखै अति
जगि राजइ दावानळ जेम ॥

६

अमर-कळोघर गुमर लियां अति,
मछर सपुर न भैवै भाण ।
असपति-सायर कट्टे आवट्टे,
रजचट्ट घट्टे न पावक राण ॥

गीत ११

महराणा राजसिंघ अगत-घोत री

१

एळ-लाखां मिर्जा ऊकळीं दोमभि,
 नेट थेट लग ऐह नियाह ।
 आं राणो चुचिते चित जागे,
 पीढे नह चुचितो पतिसाह ॥

२

फोटी कटफां भटफ करोटां
 ओडां आवै नहीं अति ।
 धियो हमीर ओभके घर तनि,
 परति न जके हमीरपति ॥

३

रळतळ जूप यरुयां रळवळ,
 सळसळ सेस हुवे समराथ ।
 जगपति तणो उणीदे जाणे,
 नीद न आवै खर्दा नाथ ॥

४

चगयां माण मळण चीश्रीही
 राजसिंघ दइवाण रक्ष ।
 दिन-दिन दुख पामतां दिलीसर
 सुख कीघो तो धियो सुख ॥

गीत ११६

मदाराणा राजसिंघ जगतसिंघीव रो

१

दिली ऊपरं राजसी राण चदियौ ज दिन -
 नयर धरु मालपुर कक नाई ।
 धुंवा सें हुवा ईद-लोक सहु धुंधळी,
 तप गयो ठेट अहाराव ताई ॥

२

सुतन जगनेस दळ फीध छारंम इसा,
 अतुर चा प्राजळै सहर अघळा ।
 पुरंदर-मंदरां बीच काजळ पई,
 सदस-फण तणा सिर जळै सवळा ॥

३

हींदवां हात अखियात घातां हुई,
 सु ज हुये जेण साखी अरक-सोम ।
 धार-धर नयण अकळावियो धुंवा सें,
 धराधर कमळ अकळावियो धोम ॥

४

आकुळत ग्याकुळत चलत नई आंगणे,
 पंघ क्खिण भांत आराम पामे ।
 सुकर दे सरुव चा नेण मूंदै सवी,
 नागणी नाग सिर घहा नामे ॥

कविता

भजे सूर मऊरुटे भजे प्राज्ञके हुतास्य ।
 गंग सलहले भजे साबत इंद्रस्य ॥
 पाणि प्रहमंड भजे कळ कून धरती ।
 नाथ गरुडन भजे अट मात सकती ॥
 शीलोहळ धुःअटळ वेद धरम वगाएसी ।
 हुंत बीतीइ-पत राण मिल किन एअसी ॥ १ ॥

। राम बीलक्षण नाम रहिया रामायण ।
 । क्रस्तु यळरेव प्रणट भागीत पुगामण ॥
 । तिक मुक व्वास क्या कविता न करंता ।
 । सरुन सेवता प्यन मन करण धरंता ॥
 । मर नम च ही तिके सुणौ सजीवण अछखरी ।
 । कहे जग राण रो पूबी पांव कवेअती ॥ २ ॥

गीत ११०

बाख्खट घोड़ा गरु अमार बत रो

१

कहियो नरपण्ड आचियां फटफां
घूयि छुडाळ, धरा दी धोळि ।
पोळि घडा गज-वाजि प्रामती,
पड़तै भार न छाड़ पाळि ॥

२

राजड़ कियो राण छळ रुड़ी,
कानी दे नीसकं बडे ।
अरि घोड़ी फोरण किम आवै,
तोरण घोड़ी लियो तडे ॥

३

आजा पीळा करे ऊजळा
सौदौ रवदां कळह सजि ।
करग मांडिया नेग कारणै,
फलम खाडिया नेग कजि ॥

४

वदियापुर सौदौ अजरायब
कलमां हं भाराथ कियो ।
एत लेती आवे दुरवाजे,
देवळ जाये मरणा दिशी ॥

गीत १२१

भोंसला राजा सिवाजी साहजीर्षीत री

उपाध्याय धर्मदर्शन ऋद्धे

१

सकति थाइ साधना, किना निज भुज सकति,
 बडा गढ धृष्टिया वीर चांके ।
 अवर उमराज कुण्ण आइ सागौ अइं,
 सिवा री घाक पतिसाह सांके ॥

२

असर करता तिके असर सहू खूंदिया,
 जीषिया तिके त्रिणौ लेइ जीहै ।
 सग्रद आराज सिवराज री साभले
 बिजी जिम दिली री धणी बीहै ॥

३

सहर देखे दिली मिले पतिसाह सुं
 चलरु देखत सियौ नाम पाटे ।
 आवियो बले कुसले बले आप रे,
 हाथ घसि रखौ हजरति द्वारे ॥

४

सहर मेळां सहर उदर बंद पाटिग
 सहर दरियाव निज धरम खोच ।
 हिंदियां राइ आइ दिल्ली लेली द्विये,
 सपल मन मांदि सुरसाण सोचे ॥

गीत १२२

राठौं दुरगादास आसकथीत नै

सोनग धीठलदासीत रै

आसिदौ वांघीरास कदै

१

दुरंगदास सोनंग बुहुं भींच अहियां बुजइ
 कथन पतिसाद नै यू कदावे ।
 जसा रा डीकरा विना गढ जोधपुर
 १ सत्री अत सखै सु ज सता खावै ॥

२

आसकन तणौ धीठल तणौ कदै इम
 प त रूपाळ अहियां पइग प या ।
 राज रौ थापियो राज न जहे, रयद,
 घणी म्हे थापसां जिक्को जोधाण ॥

३

भीर म्हे जनां जना भीरी विसमर,
 गांन कुण सकै असराज रा गाव ।
 ३ राय अक थापि उधापिया रिङ्गमलां,
 रिङ्गमलां पुइदड़ी राखिया रान ॥

४

जके भइ छेइ सोसाइ अकथर जवन
 हाथ है हिया हत हणिया ।
 पाम जोधाण अद सीग फळ पामिया,
 साद मोकाळिया जगत सुणिया ॥

गीत १२१

एठीइ महााजा अनूपसिंह कण्वविधौत री

१

मढै बाल धीसौ कहत हौं भे ऊपर मिथी,
 प्रघळ पग छांह फळ खुगौ पावे ।
 मागिबड़ किसन तिम छुर रै पौतरै
 बनै खट ही बरग रखा आवै ॥

२

हले चले हुनी मालवि मनव हालिया,
 भुयण मुर डिगे, घर आम भिळ गा ।
 मिथी घौ न.ध कवि पात धेळा पड़ी
 बडै तरवर कुंवर पलै विखगा ॥

३

दसा दूणै समति सुकवि दस देस रा
 द्यारि भुज धयी जुग पळटि चाखे ।
 संपजे नवै निध पाथ पत्र सेवता
 वंचे साजां विरम करण थाळै ॥

४

खुया जळ थोळ पधि बरायर होर जळक
 मनि किसन साम ते जदिन माया ।
 कळप प्रथ कमध छाया करे कवियणां,
 ऊबरे जिता धीकाण पाया ॥

गीत १२१

राठो १ दुरंगादास आसकळीत ने

सोनग धीठलदासीत ऐ

आसिधौ वांकीदास कहे

१

दुरंगदास सोनंग दुहुं भींच प्रहियां दुजइ
कयन पतिसाद नै यूं बहावे ।
जसा रा डीकरा विना गढ जोधपुर
रात्री अन बसै सु ज सता आवै ॥

२

आसकान सणी धीठल तणी कहे इम
पत रळपाळ प्रहियां छडग पःय्य ।
राज रौ थापियो राज न जहे, रपुद,
घणी म्हे थापसां जिर्की जोधाण ॥

३

भीर म्हे जरां जकां भीरी विसंमग,
गांज कुण सकै जसराज रा गांव ।
राघ धेरु थापि ऊथापिया रिडमलां,
रिडमलां पुडदडी राखिया शान ॥

४

जके भइ छेइ खोसाइ अकबर जवन
हाथ हे हिया हत हथिया ।
पाम जोधाण अद सीग फळ पागिया,
साद मोकालिया जगत सुथिया ॥

गीत १२१

राठीइ महाताना अनूपविप करणविषीव री

१

प्रले बाल धीसौ कहत ही भे ऊपर प्रिधी,
प्रघळ पग खांड फळ चुगौ पावै ।
प्रागिषइ तिसन तिम सूर रे पौतरै
अने खट ही प्ररणा रहा आवै ॥

२

इले चले बुनी मासवि मनव हासिया,
भुयण मुर डिगे, घर आम भिळ गा ।
प्रिधी चौ नाथ कवि पात घेळा पड़ी
बहै तरवर कुंवर पलै विक्रमा ॥

३

इसा दूरी समति सुकवि वस वेस रा
अगारि भुज धणी जुग पळटि चाखै ।
संपजे नवै निध पाथ पत्र सेजता
वचे साखा विरख करण शालै ॥

४

सुध्या जळ थोळ पधि बरावर होइ कलक
मनि तिसन साम वे जदिन माया ।
कळप प्रथ कमप छाया करे कवियणा,
अधरे जिता धीकाण आया ॥

गीत १२४

पढौइ पदमसिप करणसिधौं तौ

१

अंगजास विचै घाणास आछटे
 कहर पदम धम जगर करि ।
 मोदण माण किया मारदय
 भेकण घाय छट्टक अरि ॥

२

करण सणै विढतै यंघघ फज
 खलदळ कीधा यार अघ ।
 पांश अरध, अग अरध पाकती,
 घाच अरध अंग, सीस अघ ॥

३

रौदां भांजि ऊजळां रुकां,
 घैर घालि, उजगालि घट ।
 पग निरलंग, निरलंग अंग-पड़,
 भुज निरबंग, निरलंग अकुट ॥

४

माहै घाड करण रण सिद्धतै
 अरि साके खार्गा अमळ ।
 चरण्यां विण लोट्टै घट चौरग,
 कर विण घट, घट विण कमळ ॥

गीत १११

पटौड़ परमपिय करसिपीत री

१

घायां बहु खेत-पहुँचो प्रप घूमत,
 : हुध-हीये - कीपी तिरवाह ।
 अठै पदम गिरतै जादम नै
 गोडां तळ दीनी गजगाह ॥

२

मन धी री मुणजै, मुरधरियां,
 सुख रीभां देवण दध खीर ।
 आवै काम पदम आंटीचे
 मारि लियो टीकायत भीर ॥

३

करि शुध घरा रछो करनाणी,
 बदखोरी आयो चढि पाढ ।
 घोड़े हुंत लियो भलि घांटो,
 देयत पार करी जमश्राढ ॥

४

मैगळ तणी समापण मौजां
 सकयां रछो नही संतार ।
 अशर अर जादू रं अंग में
 कर जुत मांही रछो कटार ॥

५

भुरसी निरधण अशळ हजारं,
 रीभां दिवण सिट्टे होय राह ।
 पढ़ते पदम कमंध पशोघर
 पाढ़ि लियो दिवणयां पतिसाह ॥

गीत १२६

वीधरी गोयंद मूलाणी री

गदण गोरधन कहै

१

मिले घाट विखमौ कलह लाट लोहा भिले,
 वाज गुण चाढरे घाट बाग
 ऊकटे काट नीराट अध्रियामणौ
 साट बड़ जाट सिर भाट आगां ।

२

पदम मुख आगली द्यपणियां पधारण,
 घधारण खड़ग धड़ करण वाधार
 बलापल धाज नै महा रिण वाजियौ,
 सार रणौ सिर सांधणौ सार ॥

३

विजड़ अघभाड़ खल पाड़ जमदाद घख,
 विठे अवसाण कीभी बढालौ ।
 फाचरां चाचरे हुवौ रिण फावियौ,
 चौचरी जरां लोह चालौ ॥

४

मूळउत जीवतां संभ हल मोहरी,
 - दन खड़ग रावतां तणौ दावे ।
 गदण रिण वाज धू रण दटा गोदही,
 पटा मोटा भला जाट पावे ॥

- गीत १२५

राठौर चरैसिप हरनापौत करमसीपौठ ॥ १

घाई अनोपसिप कठै

१

घड़े भुजा असमाय, जरदां कड़ा ऊपड़े,
 गढ़गड़े तंथागळ, फड़े भुरजां ।
 ऊदखा तणी घागां जठी ऊपड़े,
 भाजि गढ चढ़इड़े, पड़े भुरजां ॥

२

नाप हुत बाधिया बाळ भुज नीमजै, -
 लुइया जम जाल खंकाळ जूटे ।
 जोध किरमाळ गदि ढाळ औरै जठी, -
 तठी पदि गाळ भुरजाळ तूटे ॥

३

गजां रत पोट, पड़ि चोट तंथागळां,
 घचण अरि झोट बै विसा धीसै ।
 घजवढां गहे मन मोट ज्यां लिर घसै,
 दघाळा कोट सेंखोट दीसै ॥

४

मतंग-पळटण खगां निहंग छिवते मखरि,
 प्रधीपति अभंग भुज तेया पूजौ ।
 घुरंग भाखां लियां जोध नवसाहसौ
 घुरंग घांका लिये कमौ घुजौ ॥

गीत १२९

बीहण बीठलदास भचळवत री

क्याय लिखमीदास कहे

१

दुद्रु घाद मात्तो कहर साह धे देखवै,
 भार पडियी कहर गर्रां भारां ।
 देस कह, धीठडा, हाति घर दिसि घजां,
 सरम कह, धीठडा, धाजि सारां ॥

२

केहरी तया जमराण मचते कंइळि,
 हुये कर जोहियां खडी दोहां ।
 पुहाटे जयानी, नेस दिस प्रघरी,
 लाजि आवै, हमै धाजि लोहां ॥

३

धमंग मळरीक इया भांति खुं ऊचरे,
 मुदौ माहरो पारी काम माये ।
 वेस हंतां बछौ, राजि अपहर घरी,
 सरम, ये द्यौ रंइजोरु साये ।

गीत १२९

बीहण पीठलदास मचळवत री

ब्यास खिसमीदास मदे

१

दुई बाद माती कहर साह धे देखवै,
 भार पहियो कहर गत्रां भारां ।
 रैस कह, धीठबा, हाजि घर दिसि वजां,
 सरम कह, धीठबा, हाजि सारां ॥

२

केहरी तया जमराण मचतै करळि,
 हुमै कर जोड़ियां खड़ी दोदां ।
 पुकारै जमानी, नेस दिस पंधारी,
 हाजि बाबै, हमै घाजि सोहां ॥

३

बनग मळरीक हण मांति खुं ऊचरै,
 भुदी माहरो खरी काम माये ।
 वेस दुतां पछौं, राजि अपहर घरी,
 सरम, ये ह्वौ रंवचोक साये ।

गीत ११-

श्रीराज गहरान रिपनशरीर श्री

१

कळि घालि लकाल कदै इम केहरि,
विठिया कजि ऊखजि केराया ।
घलिये दळे विमुदि कयूं घालूं,
घलियो विमुदि नको चहुयाय ॥

२

घौरंग बले नहीं अचलाउत,
भाड़े प्रिसया विये सग-भीक ।
मुड़िया दळ देखे नह मुड़ियो,
मुड़िये दळि जुड़ियो मळरीक ॥

३

कळदि सीह जयूं सीह-कळोघर
निडर निहसियो घाधे नेति ।
कड़िया दळ देखे नह खड़ियो,
खड़िये वळि खड़ियो रिण-खेति ॥

४

भागां साथि न भागौ कयाभंग,
आप विठे भांजिया शरि ।
केहरि सरणि पहुती अणकळ
करनदरौ अखियात करि ॥

गीत १२१

कसपादा हुनाएतिप रगामतिपीत सेगामठ री

१

नहीं आज़ जैसिघ, जसराज जगतौ नहीं,
 दे गया पीठ सह कृती दूजा ।
 मधी पाळठ हुवे, पाठ मिंदर पड़े,
 साद मोहया परे, आय सूजा ॥

२

मदक-सुन गजन-सुत करण-सुन सुगत गा,
 तिधू अन परिहरे धरम रेखा ।
 सांकड़ी चार धर राख, तो सं रहें,
 सरम मो परम ची, चिया सेखा ॥

३

मानहर भाजहर अमरहर धीसमे,
 अन पदू औसरै नको आया ।
 असुर दळ ऊपटे, आज हू अकली,
 जुइन फज पधारी, स्याम-जाया ॥

४

साद सुण नैदरी बांधि सिर ऊससे,
 परब मर चंछतौ जिसौ पायी ।
 वाद सुताण सं बांधि रग व हनी
 याद फरतां समी अगे आयी ॥

५

पाइ पतसाह घड़ सिवाहां पीढियो,
 देव-मंडल सरी नको दूजा ।
 मार मेळण घड़ जोग सूजी मिले,
 पपर पाड़ी तथा कोइ पूजा ॥

मूंघटा जगल ऐ

घणिया एनी घटे

१

घड़ अहरण रतन जसै घण घये
 दोमभि कमे कसनटी दीघ ।
 खोवन जदत जिस्ता नह सोभा
 खोह खगा अग सोभा लीघ ॥

२

कीयी जुड़े मूंघड़े कूरम
 जंघे रार घप जुग जुयी ।
 धीमत खाय कतावन कहना,
 हमे रतन फोटीरु हुयी ॥

३

रजघट पण पाणी राखेया
 भिड़ि अहरण रण गयी न भाज ।
 नकसां खोह खगा नीरुदियौ
 रतन अने जड़ियो जलराज ॥

४

पड़ियो जसे जगही पाने
 परखि निरखि चाडियो प्रमाण ।
 आयै हीटू सिंघ ओडियो
 आडौ रतन चडै अघसाण ॥

५

खोह कुदण करि जसै चजायी,
 दीनीं लाभ सु-जम जगरीस ।
 गोहणी रतन अमोलक िणियो,
 'सुज घणियो दुहु रादा सीर

गीत १११

पठोइ लाक्षिण बदली-राघर री

१

अटिंला ऊठ, सतारावला ।
 तो ऊपर घागा तिरमाळा ॥
 नाह घाघ जागो नींदाळा ।
 फहिजे फटक आविया फाळा ॥

२

छासो घातो करि दूठ लागी ।
 आयो खडि सुवायत भागी ॥
 घायूं तायूं नगारी वागी ।
 जागी, भइ कमधजिया, जागी ॥

३

मद प्याला पीयण घणमोला ।
 म्मितम साज अंतरा पइ भोबां ॥
 टार्ता खडो हुई, सुण टोला ।
 पांका भइ, ऊठो, घडवांला ॥

४

छिन-छिन घाट हेरना छाया ।
 दूय बळदळ घोडा हींसाया ॥
 अणचीत्या वेरी अणमाया ।
 ऊठो, पीत, पत्यण, अत्य ॥

५

चलरा वेण सुणे चडचायी ।
 अंग असळाव मोडणी आयी ॥
 हुलाचन ईसर दरसायी ।
 जाण फ सुती सिध जगायी ॥

६

कपूर कस्यो आयो रण काळी ।
 पांघण मावै मोढ़ पिवाळी ॥
 भुखंड पकड़ ऊठियो भाजी ।
 लेशा भचक रुठियो खाळी ॥

७

घटा घोर घंशक घणहरिया ।
 पीछां पर भडा फरहरिया ॥
 फौजां सणा हरोळा फिरिया ।
 सोळा जिम गळा सोसरिया ॥

८

अधपत हाथ दिवाड़े आळा ।
 त्रिनदां कलम किया भइ प्राद्या ॥
 सप्रवा सार चवाड़े साळा ।
 पांचूं हळा भाजिया पाद्या ॥

९

प्रथमि तणा सुणायो रजपूनी ।
 जुग रे अरथ धोति हुय जुती ॥
 आस्रम चौथे परथ अहूनी ।
 सर-सेज्यां भीलम जिम सुती ॥

१०

जूनी धइ मिलतां हइ जूती ।
 पूनी सिध सांजळा सुगी ॥
 हू-चां सीस पळे गढ हूगी ।
 छूट्यां प्राण पळे हठ छूटी ॥

[३]

श्लोक १२४

छेडा खंगारो

१

चंद्राणुणि घोर घमीर न चंचळ
 कुंवर भंडार न चिन करिया ।
 माहव समा पंगर मरण-दिन
 सोयण सुणि जी संभरिया ॥

२

सोना कळत्र सायदू साकुर
 गिण देपडत न मनि ग्रहिया ।
 पूगे दीद खंगार प्रियी-पुड
 कहते हरि चारण कहिया ॥

३

कलत्र पूत्र अस्ति गर्ध कुणै रा,
 सोटे अंत वीसरे सवि ।
 मुगति काजि संभरियो माहव,
 फीरति काजि संभरे कवि ॥

गीत ११३

धीरक यगार रायपाळीत री

१

बापिशा ज्यां कमळ कीरती कारणा
 खत्रिभं आगे, फहे धंगार ।
 फलि-जुग तया संतोषी फवियणा
 फरे गरथ दीने कै धार ॥

२

सुन रायपाळ फहे दिसि संवगां,
 सिट साजे सौभाग सुणौ ।
 गरथ वडे जस बोले गुणियण,
 गरथ तणौ फाइ खोम गियाँ ॥

३

आप्या सीस सु तो ऊपरिया,
 वसुधा वांवीजे घड गात ।
 सीधड फहे, हमै जस सुलभौ,
 गरथ सटे बोले गुण पात ॥

४

एसहंतरि घड पात विचखण
 धीर वळोधर गरथ विचार ।
 सिगळौ सु-जस लियो राइ सीधड
 खट वन फीया " धंगार ॥

गीत १२१

सोझी बैचद री

१

भंगघाट दुहेली पुच्छमट भारी
 घरी ऊक घनोज मत ।
 बैचद कहै, जीबिया जग पुट्टि
 पनरह ऊपहरां परत ॥

२

अनमी पुळ फाचडो न आणे,
 जख नमियां तथा पायो जाइ ।
 पांचावत जीविया न पड्डे
 नच खट घरत ऊपरै न्याइ ॥

३

केदह्याहरी घट मुह फटके
 आपधा मुदडे हुयी अछे ।
 बैचद कहै, निमय नद जीवू
 पांच अने एस परत पछे ॥

गीत ११७

दौलतखान नारायणदासीत री

राठौड़ मिथीरान कहै

१

दामणि परि ग्रहे सासरे दौलत
 अयला नये न रहियो ओले ।
 घाबळिपेळि तणे कळि घायो
 परिहरि पहिरणहारि पटोले ॥

२

सासरियादि नारयण संभ्रम
 साही चाख न रूणी सादे ।
 लोचडिपळि तण रस लाया
 चूनडिपळि न चादे ॥

३

रेवंत पूठी राय राटयद
 घाबंदि देह चियो असराती ॥
 लोहाउया मणे घंसि घागो
 काजि मजा तजि रामरंयाती ॥

गीत १३८

माटी दीठवसिप मुरताणौत मालदेनौत ऐ
पोरिनियो मूळी कौ

१

पदइ वाज गोळा उरइ थळ्ळ्यां ऊपरा,
महाभइ घळोवळ राग भइफी ।
अरी-घइ ऊपरा दलै अस छोरियो,
कइदियो आम, काय धीज कइकी ॥

२

पमक घमचक मचे, सोर गोळा घमक,
वीर डक घंक घक तेषु वेळा ।
साकुरां घमक सुरताण तण सनां सिर,
चमक आकास, अक कइक चपळा ॥

३

अठठ पइ डंडाळां चठठिया घाण अत
खाग भइ विकट घट लळां सिर खीज ।
तेजले विये कर रठठ भेळे तुरी,
घोम पुइ कठठ, काय भटकती धीज ॥

४

काटकूटी मचे, जोगणी किलकिले,
ऊपटां घटां अरि मार आयी ।
गयण कूटी, कनां भिइज कीधौ गरक,
धीज सूटी, कनां सेख घायी ॥

५

पाग खिव दामणी दलीं लिघ अधीखंम
जीवता संभ जस-गत जायो ।
माण मन अचंमै, ताम सालीं भिइज,
आभ थांभा दिये कुसळ आयी ॥

रात्रस्यानी धीर-गीत

गीत १२६

भाटी बदरीविष नं अनोपविष पिरागद घोठ पै

१

मिलि मायां कियो मती मा-जायां
दळ घळ छळ आयां दुरित ।
गायां गयां जीवियां पुण गत,
गायां आरां मुगं गत ॥

२

सभियां खाग पिराग-समोन्नम
साची कहे चइते सार ।
विन लीजे ऊभां वाइरवां,
लाणति उवां वाहरवां कार ॥

३.

बदरे अने कही घांतां विह
छित सुरां देयां मरणा ।
..... " " " "
..... " " " " " " " " ॥

४

मय-प्रथ किया जाइमे प्रामा
आभा मांटीपणे अयी ।
भारय घट पडियां कटि भाया
गाया घट खुंदती गयी ॥

गीत १४०

एटीइ मानसिप नै वैशीदाघ री

घांदू जगो बहै

१

ले रा थोन्न उपगार खँसार ऊपर सदा,
काम पड़िया करै दूक काया ।
पटां री लाज सहु फोइ आवे प्रथम,
(अ) अणपटां घटा रै काज आया ॥

२

दि-याट एांकतां खाग होंगोलहर
गजे थरा गया अरि लोथ गाहे ।
ऊलटां पठां जाडां घटां ऊपरां
विस्तर चढिया फहर जोह ध.हे ॥

३

लागद-सुत अमर सुत नाम राखण जरु
सरु जस थोलिवा सूर साखी ।
दूक जाडां थंडां भूक टल ढाहिया,
रुक रजपूत-घट भली राखी ॥

४

सुघ तयां भरोसौ अगै ही जाणता,
कमध राग चाल घसचाल करता ।
मानरी घेण फौजां तया मीशरी
पाजि वैकुंठ गया डाण भरता ॥

राजस्थानी धीर-गीत

गीत १४१

पड़िहार राजसी रो

हरिसुर कहै

१

राइ चूकै घात राजसी राउत
सुज अखियात यदै संसर ।
धइ ऊठियो ज सभियै धजवाड़ि
पड़ियां कंध पछी पड़िहार ॥

२

ये अखियात मनाइर ओपम
कळहि दुश्रंगम सयळ कहै ।
घप सिर संधि यहे वीजुनळ
यज प्रिययां सानुही यहे ॥

३

जेठी-संधम जगप्र सहु जंपे
धन छित सूरन साहस धीर ।
पंडि हुंता उतंग पाळटिये
रुप्र सागहा क्रम दियै सरीर ॥

गीत १८२

भैया सांगा री

कल्याणदास जडावत कवी

१

बढ़ि सांगी तखी मरोसौ करता
तीन चशर खागी तरवारि ।
सांगबा तखी फटारी साची
मारणहार राखियो मारि ॥

२

बहियै खागि पछे उर घाही,
जीर ऊकसी मोर जुई ।
भैया तखी जडाळी समहरि
हुनते चूक अचूक हुई ॥

३

पड़ती बाध साथ पळटंते
हाथ बलाणि बलाणि हियो ।
मारण मरण मारके मणै
फूड ऊपनै साच कियो ॥

४

रळ पड़िहार पमार अखाड़े
लिप भुज बहे फटारी खाग ।
मुफ फरि राग थाटियो मैणी
बागताणी नायो सुजि राग ॥

गीत १४३

निराख सीहा रो

१

पग मांडो, मड़ां, न जायो पाह्नि
 छरि मिलियां, पखिये अवसाण ।
 अतड़े अतै भड़े ऊतरियो
 न चढे नीर, रुदे निरयाण ॥

२

समचे धेम सघर नर सीहो
 करिमरि घूणांती सु-परि ।
 पानी गयो न बळही पाछो
 पहां परवतां अक परि ॥

३

सामि सनाह चियां दिस सुपहां
 भड़ भांखनी अेम भति ।
 कतियूं नीर न पनियूं काहो
 गिरां नयां अेकाज गति ॥

गीत १४४

उडीइ हरपाल देवराजीत री

आविनी हूतौ बदे

१

काली निस पाण्ड खिसै नर कायर
दळ आवता गियो हुरवेस ।
घणिया पिया भला राट घूइइ
नेउहते आपाणा नेस ॥

२

असुर तयो आचात्र ऊरग
रज राखिया हुचौ रखपाल ।
खीपां तणः पुराणा खोलइ
हिया न ऊतारै हरपाल ॥

३

सायर तयो सरस साई दळ
मरिवा खलण मांडिया मेढ ।
माम्नी मेर नगो मोर धली,
बिढिया रहिया फांटा घेट ॥

४

अइपायती अइप आपाणी,
फडिल चराह संग्राम करि ।
सुहंगा फांटा तणः सेरहे
सुहंगा दीया भखा मदि ॥

गीत १४६

राजेंद्र हरीराम ऊहड़ री

१

आजै हम हरी कळप मख ऊहड़,
 सिर मुहंगा बांधै आर सुत ।
 तरवर हुवै जिसड़ा बिन पातां,
 पातां बिन तिसड़ा रजपूत ॥

२

दळ सिणगार कहै गोदाउत,
 धिर जस अथिर फट्टु थावंत ।
 बिस्र-झाया आचारि खत्री वंस
 पातां सुं सोभा पावंत ॥

३

घनि जिण घरा सरीखा ऊहड़,
 जगि पातां घनि वारि अका ॥
 राखै हरी अखै यह राउम
 घाटां सिंस आसना थका ॥

४

तरवर सदा पुराणा पातां,
 थायां नथा पखै विण घान ।
 अर-आयाग सु-विरख नव-सहसां
 पूज नथा पुराणा पात ॥

अनुपूति-गीत

गीत १४६

महात्मा सादृष्टिहमी है

१

घर वृद्धी साहुळ भूप वीरघर,
आशुंद-सरे उमगाणी ।
मन-मन में नव अंकुर उमग्या,
जंगलघर लहरायो ॥

२

नाचे सांरंग, सांरंग बोजे,
सरंग बापूकारे ।
वीरहरा जीयण वृंतां
सुरघर टडुका मारे ॥

३

घाजे घर-घर रहस बघाई
तो वृंतां घोकाले ।
तीज तणीं तिवहार सदांही
वीर तणीं घर माये ॥

४

कुळवट-पालण करण-समोअम
बहु मीत्रां घरलावे ।
सायण वीरानेर सुरंगी
बाहुं भास मनावे ॥

प्रतीकानुक्रमणिका

.. अकबर समद अयाह	७०	६.
१. अकरूर न जुजठळ भोंव न अरिजण	...	४१	
अजै सूर मळदळै...	११६	क.
२. अडड वाज गोळां उरड थळेचां ऊपरां	...	१३२	
३. अडै भुजां असमाण जरदां कडा ऊपडै	..	१२७	
४. अनुळीयळ अमर न सहियां ओफर	...	६५	
१. अंधकौ जव नकूं नकूं तिल ओळी	...	७०	
६. अपूय घात सांभळी अेदी	१५	
७. अभंग चडो ऊरार संतार तिर ओपियो	...	६०	
८. अमर आगरै अखियात उयारी...	..	६६	
९. अमर राव पाळ दिवस	१००	
१०. अरधंग फंठ सीस जसे ओपावै	...	८५	
११. अरि - नार घडै भरतारां आगै	१०	
१२. अयसाण चडै अखियात उयारी	...	८३	
अस खेगो अणराग...	...	७०	क.
१३. असंख सेन जाई सहू आसिया अेकठा	...	७१	
१४. असुरां सुं किया कमंव असंकित	..	१३	
१५. अंबणास विचे पाणास आदुटे	...	१२४	
१६. आखै इम जगो राण अनि कारां	...	६२	
१७. आखै इम हरी फळप-मख ऊहड	...	१४५	
१८. आयां दळ सपळ सामही आवे	६४	
१९. आंटीला ऊठ सतारापाळा	१३३	
२०. एबराहिम पूय दिसा न उळटे	३०	
२१. इम फडै महेस घडे प्रय आवै	३८	
२२. इम उत्रियां तया वंत गिहुं आळा	..	३	
२३. ईळा चांतोड सहू घट आती	९	
२४. उमै फाशिया यिरद असरात्र पगि ऊत्रळा	...	११६	
२५. ऊगां दिन समा फंटे आळादा	६६	
२६. ऊगां विया घट जेदयां अंतर	१२	

२७. कड़ि बांधी तयाँ भरोसी करता
कमधज हाहा कूमा
२८. कर भेरु कयौ कर वियै कटारी
२९. कळहेया चूक कुंभकन राणी
३०. कळि चालि लंकाळ कहै इम केहरि
३१. कळी सेत मन पाळट पढ़ै जोखिम कळस
३२. कहर काळ खंफाळ थळिराय गत्र केसरी
कहां राम काँ लखण
३३. कहियो नरपाळ धावियां कटकां
३४. कहिस्यां तो तूभ भजीं करणाकर
३५. कहे कंथ नू दुहं कुळ ऊजळी कामणी
३६. कंघरां गुर भेम पयंपै केसव
३७. काळि काळि चन कीधी काया
३८. वापिया ज्यां कमळ कीरती काया
३९. काळी निस पाण विस नर कायर
४०. किता फांट सेंबोट चढ़चोट अकरवर किया
४१. कुंवर कासीस कळि मूळ करि मभियां
४२. केफाण अरथ ऊतम कुंभकन
४३. खटके खत्र-वेध सदा खेड़हतौ
४४. खरै खेत खुरसाण रा पिसण हुय पाहुया
४५. खळफट नू सदा सागरत खांडी
४६. खंडां लख मेर पवै खूमाणी
४७. खानाणे खडे खड़ग वळ खाधी
खुसी हूंत पीयल कमध
४८. गजरूप चढण अग रहण असंभ गति
४९. गळप्रतिश्रे घणा किया गढ-रोहा
५०. गयंइ मान रे मुहर ऊमौ हुतौ दुरइ गति
५१. घड़ अहरण रतन जसै घण घायै
५२. घावां घडु खेत पड़यो प्रप घूमत
५३. घडे पूर पात्रस वहे रायमळ'रण घडे
५४. घवै घेम जैमाळ घीतांड मठ चळवळे

	चहुवायां दिल्ली गयी	८१ ५.
५५.	चहुवायां पळे चढे रिण चाचर	७५
५६.	चंद्राक्षि चीर चमीर न चंचळि	१३४
५७.	चालंती कोट पयंपे चूंढी	१६
५८.	चौरंग चूरिया घर सेन चाई	५८
	चग दिणियर पाखै जिसेी	४ ५.
५९.	जुग पार पळे ग्या मुझ जोवंनां	८४
६०.	जुग भल स्योराम सुणायें जाये	४४
६१.	जुग बीता अनंत आंवतै-जातै	१०४
६२.	जै रा योळ उपगार संसार ऊपर सदा	१४०
६३.	ढाडां ढोलां अर ढीचाळां	५६
	ढिग अकबर-दळ दाण	७० ५.
६४.	ढीली पह आर्ये राण ढीलिये	५५
६५.	तणी घघायण नेन बंध घरण सोढां तणी	७
६६.	तप करि कांइ खरी करी कांइ ती घ	१०६
६७.	तिल तिळ तन हुयी तणी जद तूटे	४६
	तुरक बहासी मुळ पतं	७० ५.
६८.	तुफ मुगर ताणीजतै सह फोइ समरियो	५०
६९.	त्रिजड भालि आगळि धसे साहि दारा तयो .	.	११२
७०.	त्रिजडाइय समरथ करण साहरी	६१
	मिर नग हिदुपान	७० ५.
७१.	दळ जाले सयळ टाग-भळ दोमभि	११७
७२.	दळ लापां मिली ऊफळी दोमभि	११८
७३.	दघ दाघी अक थेक दुघ दाघी	१०८
७४.	दामणि कर प्रहे सासर दौळत	१३७
७५.	दिन मांचे दूद रांर ये दमगळ	११५
७६.	दिली ऊपरां राण राजसी घटियो ज दिन	११६
७७.	दिली-साह छळि उजेयो याह घग दाघने	११३
७८.	दुरंगदास सोनंग दुहुं मांचे गहियां दुजड	१२२
७९.	दुहुं याद माती कहर साह ये देघये	१२६
	देवळ विघ देव काम निघ दाघय...	४ ५.

८०.	घर धुञ्जं गज्जै गयण घञ्जै मेरि निहात्र	११०
८१.	धानंतर मयंक हणु हुक धावौ..	४४
	घम रही रहसे धरा ...	८१ वृ.
८२.	नक तीह निघाणु निपळ दाय नावे ...	४५
८३.	नत्र कोटां तिखक नमतां निय वळि ...	५३
८३.	नहीं श्रात्र जैतिघ जसराज जगतो नहीं ...	१३१
८५.	निहंसि जोघ गजपति कळह कोइ मांड नहीं ...	७२
८६.	पग मांडी भडां न जायी पाळा ...	१४३
	पकूं मूछां पाण ...	७० वृ.
	पड़े नह पोठी ..	७६
८७.	पड़ियो नेजाळ त्रिडे पाटरिये .	३३
८८.	पड़े बुंइ ढोली सहर सोर मांडव पड़े ..	२८
८९.	पण ग्रहिया जेत मिलण कत्र पातां	१२
९०.	पगम रूप पतिसह संसार पंकज पगे	८२
९१.	पहिलीं सखळ स जूकी पौरिस	८०
	पंखि भलें किखूं भगनि पद्दासे	४९
	पातन जी पतिसाह ..	७० वृ
९२.	पाताळ तडे यळि रह्या न पावूं	६०
९३	पाहाइ चडे असमान पाकड़े ..	८१
९४.	पिडि म्हीरु ठीक गयण जगि पहुंचे ...	१२८
९५.	पिडि साभि पठाण परसि पुरसोतम	७३
९६.	प्रगटां पंडवेस सु-पह साचरिया ..	३७
९७	प्रथम नेह भीनी महाक्रोध भीनी पछे ..	६
९८.	प्रथम मारियो सलावतयान किताई पछे ..	६७
९९.	प्रळैकाळ वीसो कहत हौं शे रूपे प्रिधी	१२३
१००.	बहु रावां राणां चव विवरजित	१६
१०१.	बापीसि मामि पगवरि चोले ..	३५
१०२.	बापीहा मोर कोकिना चोले ...	८६
१०३	बावन न बळी त्य गियो सरवस	२
	बांधीचे नवा बाळिग बोदा .	१४४ गी.
१०४.	बिडड ऊठियो घुणि गिर मेर स्तो बहादर	१०१

१०५.	विजड़ ताप तो नमो परनाप सांगण विधा .	६३
१०६	मर सूतां नींद ऊपर भीमा ...	७७
१०७.	भंगवाट दूहेली कुलवट भारी .	१२६
१०८.	भारथ मभि मिले दूसरी भारथ .	१०७
१०९.	भिड़-भिड़ भगद्वै फोड़ वीर पढ़े भुवि .	१०२
११०	मळण माण असुराण रंद राण वेदीनणा ..	७६
१११	माटीतण तणो अरी-घार मिलतां .	६७
११२.	माटीपण नमो मूवहर मफो	५२
११३	मिटिये निज दळं मित्त जी मधकर	३६
११४.	मिळि भायां मती कियो मा-जाया ...	१३६
११५.	मिले घाट विखमो कळइ छाट लोहा मिले ...	१२६
११६.	मुघ साठ मुहांमुहि हुकम विछुटा .	१०५
११७	मुहं किम आविये परव वैरडा मुखिस गुर	८८
११८	मेवाड़ तणा में दीठा मांगे .	६३
११९	मांड़े घड़ सोरठ मेछ मणारंन ...	६१
१२०.	मोल न आणया फोड़ घीभन न मेठ्या ..	२५
	गुं फिर-फिर आरी ..	७६
१२१.	रंग राती चीत फण्टहर राजा	४२
१२२	राह चूके घात राजसी राउत .	१४१
१२३	राणी म-म रोह पियो रिण-रीघळ ...	५४
१२४	रिह गा रिखपाळ हुता जे राउत ...	४०
१२५.	लख समपे जु ते मांडिया लाखा .	५
१२६.	लड़े मुडो पनिवाह विमुक्ष फडो लखकरा ...	१०६
१२७.	वडे ठोड़ राठीड़ अखियात राखी चडी	६६
१२८.	चडी खुर सु-दतार रायसिंघ विसरामियो ...	६१
१२९	चमीखण जोय कणै-गढ पेठी ...	२२
	वरजे राती नाम ...	७६
१३०.	घर वूडो साडुळ भूप वीकघर	१४६
१३१.	घरियाम विहंग न लहे वेसामी .	६५
१३२.	घहे करारा लोह ओरे जठे गहादर .	१११
१३३.	'बाहाइनगर घाराह विधूसे .	११

	विश्व तयै दिन वैश्वे	८२ ६०
१३४.	चिनडाचि अनेरा जिहीं वैरसन्न	७२
१३५.	घेरायां ल.इ विसम छळि घीके...	२३
१३६.	घं जं ऐं विज्ञौ विदया त्रिव जाणै	.	.	४३
१३७.	सकति फाइ साधना किना निज भुज सकति..			१२१
१३८.	सत चार जरासंध अ.गळि स्रोतग	३१
१३९.	सरवर नदि सघण कोडि चड करिसण	२४
१४०.	सहर लूटती सरय नित देस करती सख	६२
	संमिले बारह मेघ समधि	४० घं
	साळ्या हंरी साय	४६.
१४१.	सांगण दूसग अभतमा उदैती...	७६
	सांग मूंइ सहसी वको	७० व,
१४२.	सिमियाणै कलै कियौ जिम-साकौ	८७
१४३.	सिं सपति समदे निहसै नित प्रति	१४
१४४.	सुरताण तणा गव र या सराहे	११६
१४५.	सुरताण हुवा भंभीत सपेखे	६८
	इपलेपौ गर-वोक	४६.

२ वीर-नामानुक्रमणिका

१.	अमर गजबगौत, भाली (घडी सादही, मेवाड)	३३
२.	अनूपसिंघ करणसिंघौत, राठौड़ (घीकानेर)	१२३
३.	अनूपसिंघ पिरागदासौत, भाटी ...	१३९
४.	अमरसिंघ गजसिंघौत, राठौड़ (नागौर) ...	१४-१६
५.	अमरसिंघ प्रतापसिंघौत, सीसौदियौ (मेवाड)	७६-८१
६.	अमरौ बरपाणमलौत, राठौड़ ...	६२
७.	अरजण घीटलदासौत, गौड़ ...	१०५
८.	उदेसिंघ हरनाथौत, राठौड़ करमसियौत ...	१२७
९.	करण घीजायत, स'घदियौ ...	४४
१०.	करणसिंघ अमरसिंघौत, सीसौदियौ (मेवाड)	९१
११.	करणसिंघ सुरसिंघौत, राठौड़ (घीकानेर) ...	११०
१२.	कलौ रायमलौत, राठौड़ ...	७५-७६
१३.	कांचल रिद्धमलौत, राठौड़ ...	२०
१४.	किसनसिंघ रापसिंघौत, राठौड़ (सांखू, घीकानेर)	=६
१५.	किसनाचती बहू गही (अमरौ) ...	१०७-१०८
१६.	कुंमकाण मोकळौत, सीसौदियौ (मेवाड)	१७-१८
१७.	केसरीसिंघ वैरसलौत, कल्ल्याही ...	६०
१८.	खंगार रायपालौत, राठौड़ सांधल ...	११५
१९.	खंगार सोढी ...	१३४
२०.	गहड़ हमीरौत, यादव ...	३४
२१.	गांगी बाघायत, राठौड़ (मारवाड) ...	३५
२२.	गोकळदास मनोहरदासौत, राठौड़ चांपायत ...	१०४
२३.	गोयदास भूळायत, चौबरी (जाट) ...	१२६
२४.	घंङ्गमेश मालदेवौत, राठौड़ (मारवाड) ...	७१
२५.	घांदी वीरमदेवौत, राठौड़ मेड़तियौ ...	५८-५७
२६.	घूंडी लाखायत, सीसौदियौ ...	१६
२७.	घूंडी वीरमदेवौत, राठौड़ (मारवाड) ...	१३
२८.	जगतसिंघ करणसिंघौत, सीसौदियौ (मेवाड)	६२
२९.	जगमाल जैसिंघदेवौत, चौहाण सांचौरौ ...	५१
३०.	जसमादे हाडी (मारवाड) ...	११५

३१.	असठप मूँघड़ी	१३२
३२.	असवंत सिंघीन, चौहाण सोनिगरी	.	८४ ८५
३३.	असवंतसिंघ गजसिंघीत, राठीड़ (मारवाड़)	११३-११४	
३४.	असौ हरधमळीत, जाड़ेची ..	.	४६
३५.	जैचंद, सोळंकी...	...	१३६
३६.	जैनमाल सलखावत, राठीड़ ..	.	१०
३७.	जैनसौ लखकरणीत, राठीड़ (वीकानेर)	.	३३
३८.	जैमल वीरमदेवीत राठीड़ मेड़तियो	५५-५७	
३९.	जैसिंघ महासिंघीत, कळवाही (घांगेर)	...	१०६
४०.	जसौ कगाटीत, सरवहियो	...	२१
४१.	जोधी रिद्धमळीत, राठीड़ (मारवाड़)	...	१६
४२.	अरडी यूहावन, राठीड़ घांघल	...	८
४३.	दळपतसिंघ रायसिंघीत, राठीड़ (वीकानेर)		८२
४४.	दळपतसिंघ सगनावन, सांसोदियो	...	६३
४५.	दुरगादास आसकरणीत, राठीड़	...	१२२
४६.	दुई जोधावत, राठीड़ मेड़तियो	.	२५
४७.	देवीदास जैतावन, राठीड़	...	५३
४८.	दौनतपान नारायणदासीत, राठीड़	...	१३७
४९.	दौलतसिंघ सुरनाणीत, भाटी	..	१३८
५०.	नरी अमुरावत, चारण सांदी	...	१२०
५१.	नाइरपान किसनदासीत, चौहाण सांचीरी	..	१३०
५२.	पदमसिंघ करणीसिंघीत, राठीड़	... १२५-१२५	
५३.	पचायण, पभार	...	५२
५४.	पावू घांघळीत, राठीड़	...	६-७
५५.	प्रतापसिंघ उदैसिंघीन, सांसोदियो (मेवाड़)	६३ ७०	
५६.	प्रतापसिंघ सुरनाणीत, भाटी	...	११६
५७.	प्रिदीराज जैनावन, राठीड़ (यगड़ी, मारवाड़)		५४
५८.	पदुतीसिंघ विरागदासीत, भाटी	...	१३६
५९.	पळू गोपाळदासीत, राठीड़ घांपावत	... १००-१०३	
६०.	भीम हुंगरीत, भाटी पाट्ट	...	७७
६१.	भीम हरराजौत, भाटी (जैसळमेर)	...	७४
६२.	भोजराज सादावत, राठीड़ कपावत	...	३७

६३.	मन्नीनाथ सचचायत, राठौड़ (मारवाड़) ..	११
६४.	महाराज अक्षैराजीत, राठौड़ ..	२७
६५.	महेस बल्ल्याणमन्नी, सांघजौ ..	३२-५०
६६.	मानसिंघ भगवंतदासीत, फर्रुखाही (कावेर) ..	७-७३
६७.	मानसिंघ, राठौड़ ..	१४०
६८.	रनन महेमदासीत, राठौड़ (रनलाम) ..	११२
६९.	राजसिंघ जगतसिंघीत, सीसाँदियौ (मेवाड़) ..	११७-११९
७०.	राजसी, पट्टिहार ..	१४१
७१.	रायमल्ल कूमकरणीत, सीसाँदियौ (मेवाड़) ..	२६
७२.	रायसिंघ कल्याणमन्नीत, राठौड़ (वीकानेर) ..	६०-६१
७३.	रायसिंघ मानसिंघीत, भाली ..	५०
७४.	रायल लाम्नावत, जाड़ेचौ ..	४५-४७
७५.	रिद्धमल चूडायत, राठौड़ (मारवाड़) ..	१४-१५
७६.	लापौ फूलाणी, यादव सम्मौ ..	५
७७.	खालसिंघ, राठौड़ (बड़ली) ..	१३
७८.	वीकी जोधायत, राठौड़ (वीकानेर) ..	२२-२३
७९.	वीजौ दूदायत, सरयहियौ ..	४२-४३
८०.	वीठळदास अचळायत, चौदाण सांचौरौ ..	१२८-१२९
८१.	वीदी जोधायत, राठौड़ ..	२४
८२.	वैशीदास, राठौड़ ..	१४०
८३.	वैरसल खंगारौत, फर्रुखाही ..	८५-८६
८४.	वैरसल प्रिथीराजौत, राठौड़ जैतायत (धगड़ी) ..	७८
८५.	सन्नसात्र गोपीनाथौत, चौदाण हाडौ (चुंदी) ..	११२
८६.	सलखौ तीडायत, राठौड़ (मारवाड़) ..	१०
८७.	सादृळसिंघजी गंगासिंघीत, राठौड़ (वीकानेर) ..	१५६
८८.	सादृळ सांमतसोहीत, चौदाण सांचौरौ ..	१०६
८९.	सांगी, मैणौ ..	१४२
९०.	सांगी रायमन्नीत, सीसाँदियौ (मेवाड़) ..	६८-७१
९१.	शिवाजी सादजीयौत, भोंसळौ मराठौ ..	१२१
९२.	सिरी, घाढेब ..	४१
९३.	सीहौ, चौदाण निधाण ..	१४१
९४.	सुजाणसिंघ स्यामसिंघीत, फर्रुखाही सेनावत ..	१३१

६५.	मेखी सुप्रधान, राठौड़	३५
६६	मोनंग ठिठदासीत, राठौड़ चांपावत			१२२
६७	हमीर अहसीपीत, सीसौदियी (मेवाड़)	.		६
६८	हरपाल देवराजौत, राठौड़	.		१४४
६९	हरीराम गोदावत, राठौड़ ऊहड़	.		१४५
१००	हाथीसिघ गापालदासीत, राठौड़ चांपावत	.		८१

३ वीर-जाति-नामानुक्रमणिका

कळवाहा	...७२, ७३, ८७, ८८, ८९, ९०, १०६, १३१
सेबावत १३१
कळवाही राणी १०७, १०८
गहबौज	६, १६, १७, १८, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७९, ८०, ८१, ९१, ... ६२, ६३, ११७, ११८, ११९, १२१
गौड १०५
घारण, सौदा १२०
चौहाण ...	५१, ८४, ८५, १०६, ११२, १२८, १२९, १३०, १४३
निरघण १४३
सांचौरा	... ५१, १०९, १२८, १२९, १३०
सोनिगरा ८४, ८५
हाडा ११२
हाडी राणी ११५
चौधरी (जाट) १२६
भाजा (मत्रघाणा).... ३३, ५०
पडिहार १४१
पमार	... ३८, ३९, ४०, ४२, १३४
सांखबा ३८, ३९, ४०
सोढा १३४
भोसळा मराठा १२१
मुंघडा १३२
मैय्या १४२
पादव	५, २१, ३४, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४९, ७४, ... ७७, ११६, १३८, १३९
जादेचा (हाबा)....	.. ४५, ४६, ४७, ४९
भाटी	... ७४, ७७, ११६, १३८, १३९
वरघडिगा	... ७१, ४२, ४३, ४४

राठीङ् ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५ १९, २०, २२, २३,
 २४, २५, २७, ३५, ३६, ३७, ४१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८,
 ५९, ६०, ६१, ६२, ७१, ७५, ७६, ७८, ८२, ८३, ८६,
 ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३,
 १०४, ११०, १११, ११३, ११४, १२२, १२३, १२४,
 १२५, १२६, १३३, १३५, १३७, १४०, १४४, १४५, १४६

ऊहङ्	१४५
कामसियौत	१२७
चांपावत	..	८३, १००—१०४, १२२	
जैनावत	..	५३, ५४, ७८	
जोघा	२२-२५, ३५, ७१, ७५, ७६, ६४-६६, १११, ११३, ११४		
घांघन	..	६, ७, ८	
मेरुतिपी	..	२५, ५५—५९	
रिङ्मलीन	..	१६, २०, २७	
रूपवत	..	३७	
वाढेच	..	४१	
वीका	३६, ६०—६२, ८२, ८६, ११०, १२३, १२४, १२५, १४६		
सीघल	..	१३५	
घाढेल (राठीङ्)	..	४१	
सीसौदिया (देखो गहळीत	
खोळंकी	..	१३६	

४ कवि-नामानुक्रमणिका

१. अनोपसिंघ सांडू	१२७
आढी, किसनी	१६
, बुरसी	६१, ६४, ७५, ८०	
भासियी, मूठी	१
० , दूवी	१४७
, पीयौ	६८
, रामौ	१४२
, घांकीदाम'	६, १२२	
२. आसौ बारहट	३४
३. आसौ सांडाश्च	१३३
४. ईसरदास बारहट. ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४९, ५०,	४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४९, ५०,	...	१२१
उपाध्याय धर्मवर्धन			१५२
५. कल्याणदास ज्ञानावत	१५२
६. कल्याणदास सौर्दा	९१
कवियौ, रामनाथ	७ वृत्ता
७ किसनी आढी	१६
८. कैसौदास गाढण..	९४, ९५
सिद्धियौ, तीकमदास	१२८
९. खेतसी जाबल	१०६
गाढण, कैसौदास	६४, ६५
, गोरधन	१२६
, माधौदास	१७
१०. गिरधरदान	७
११. गोपाल चरहावत मीमण	७२, ७३
१२. गोरधन गाढण	१२६
१३. गोरधन बोगसी	६३, १८७, १०८	
१४. चतुरौ बारहट	११०
१५. जमी सांडू	१४०
१६. जमणी सौर्दा	३१
१७. मूठी भासियौ	१
१८. ठाकुरसी बोगसी	७८

१९.	ठाकुरसी सामोर जगनाथीत	...	८४
२०.	तीकमदास खिड़ियौ	...	१२८
२१.	दुरसौ घाढी	६१, ६४, ७० दूहा-क०, ७५, ८०	
२२.	दूदौ आसियौ	...	१४४
२३.	दूदौ बारहट	...	१३
२४.	धरमौ	...	१५
२५.	धर्मवर्धन, उपाध्याय	..	१२१
२६.	नरोत्तमदास स्वामी	...	१४६
२७.	पीयौ आसियौ	...	६८
२८.	पूरी (पूरणदास) महियारियौ	.. १०६, १११	
२९.	प्रिधीराज राठीड़..	... ६६, ७० दूहा, ७७, १३७	
	-बारहठ, आसौ	३४
	, ईसरदास...	४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४९, ५०	
	, चतुरौ	११०
	, दूदौ	१३
	, महेश	७६
	, रतनसी	१०४
३०.	पाळ सौदी	..	९
	योगसौ, गोरधन	.. ६६, १०७, १०८	
	, ठाकुरसी	...	७८
३१.	मरमौ रतनू	२७
	मोजग, सोहिख	.	७४
	महियारियौ, पूरौ	१०६, १११	
३२.	महेश बारहट	..	७६
३३.	माधौदास गाढण	.	९७
३४.	माछौ सांडू		८१
	मीसण, गोपाळ चरदाधत	.. ७२, ७३	
३५.	मूळी घीरंनियौ	..	१३८
३६.	रतनमी बारहट .	..	१०४
	रतनू, मरमौ	३७
३७.	राजसिध, महाराण	...	१२९ क. (२)

	राठीड़, प्रियीराज	...	६६, ७० दूहा, ७७, १२७
३८	रामनाथ कवियों ..	.	७ दूहा
३९.	रामों आसियों	.	१३२
४०.	रूपसी लाखस ..		८६
	लाखस, खेतसी	.	१०६
	, रूपसी	..	८६
४१.	लिखमीदास व्यास	...	१२६
४२	घांकीदास आसियों	.	६, १२२
	वीरंभियों, मूळी	..	१३८
	व्यास, लिखमीदास	...	१२९
	सामोर, ठाकुरसी	.	८४
	सांढाइच, आसों	.	८३
	सांढू, अनोपसिघ	...	१२७
	, जमों ..	.	१४०
	, मालों .	..	८१
४३.	सुरताण		४ दूहा - खंड
४४.	सोहिख भोजग .	.	७४
	सांदों, कन्याणदास	.	९१
	, जमयों	.	३१
	, धारू	९
४५.	हरसूर (हरिसूर)	.	१४, १९, २४, १४१

श्री सादूल प्राच्य ग्रंथमाला

‘गीत-मंजरी’ पर प्राप्त

कुछ सम्मलियों के उद्धरण

“डिंगल भाषा में गीत एक अनोखी और घमन्कारी वस्तु है और वे हजारों की संख्या में मिलते हैं परन्तु अब तक उनका प्रकाशन नहीं हुआ। आपने टिप्पण सहित ४२ गीत प्रकाशित किये जो पीकानेर से संबंध रखते हैं। यह पहिला ही गीत-संग्रह है, जिसको प्रकाशित कर आपने डिंगल भाषा की अनुपम सेवा की है। इसके लिए आपको तथा ग्रंथमाला के संपादन-मण्डल को मैं हार्दिक यथाई देता हूँ गीतों का संकलन कुशलता-पूर्ण और सुन्दर हुआ है।”

—गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

It contains 42 rare original songs and will be highly liked and appreciated not only by the Rajasthan public, but will be welcome by the Hindi and Dungal loving people abroad as well "

P HARI NARAYAN SHARMA,
Vidyabhushan, Jaipur.

“Apart from their philological and historical importance, which is very great indeed, the *Gitas* selected are of immense literary value, and represent the true gems of the Dungal literature. The notes supplied are excellent, as is the brief introduction.”

M. L. MENARIA,
Gangore Ghat, Udaipur.

‘Thankfully received a copy of *Git Manjari* Which student of medieval literatures and language of North India would fail to welcome a Series that proposes to publish Rajasthani and Hindi classics ’

HARI VALLABH BHAYANI,
Bharatiya Vidyabhawan, Bombay

“ The collection has been well done and the idea of publishing texts in old Rajasthani and Hindi is as admirable as timely

V S AGRAWALA,
Provincial Museum Lucknow

“The idea of publishing the Rajasthani songs is indeed welcome, and we eagerly await many such volumes These songs are surcharged with the spirit of martial traditions, and in addition they are valuable specimens of post Apabhramsa linguistic stage

A N UPADHYE,
Kolhapur